प्रार्थना।

सर्व साधारण काव्यरसिक महाशयोंसे सविनय निवेदन है कि; जो इस ग्रंथके अंतमें कुछ समस्या अपूर्ति लिखी है यदि जो सुकवि सज्जन महाशय कृपापूर्वक उनकी यथाशक्ति सुन्दर पूर्तिकर निम्नोक्त नामधाम पर प्रेषित करेंगे तो हम उन महाशयोंके परमानुग्रहीत होंगे. और उन पूर्तियोंमें जो उत्तम पूर्ति होंगी उसे हम समाचार पत्रोंमें प्रकाश करनेके पश्चात् जो नवीन पुस्तक प्रकाशित होगी उसकी एक प्रति उन पूर्तिकर्ता महाशयोंके प्रसन्नतार्थ उनकी सेवामें पारितोषकार्थ प्रदान करेंगे. (पतापूरा आनेपर) आशा है कि सुकवि महाशयगण अवश्य अविलंब इस प्रार्थना पर ध्यान दे हमे प्रोत्साहित करेंगे—

सुकवियोंका दास,
बनवारी लाल गुप्त
सदरबजार
जबलपूर.

पंडित सूर्यनारायण त्रिवेदी
मन्त्री, "नागरी साहित्यरसिकसभा"
स्थान सदर बाज़ार,
जबलपूर.

निवेदन पत्र।



नागरी रत्नभंडार.

सम्प्रति नागरीकी दुरावस्था से नागरी पुस्तक समूहका एक स्थानमें संग्रह अर्थात् पुस्तकालयों का भी अत्यन्त अभाव है, विशेषतः इस क्षुद्र नगर जबलपूर सदरबाज़ार में परमावश्यकता है अतएव सभाने इस अभावके पूर्त्यार्थ प्रयत्न किया है, बरन यह महत्कार्य बिन सर्व सज्जन हिन्दी हितैषियों की सहायताके होना दुर्लभ है इसकारण समस्त हिन्दी भाषाके ग्रंथकार, सुलेखक, तथा यंत्राधीशोंसे विनय है कि निज अद्वितीय पुस्तकों की एक २ प्रति कृपापूर्वक अर्पण कर सभाके उद्देश्यकी पूर्ति कीजिये, और यह भी संकल्प किया है कि नित्य नवीन मनोहर ग्रन्थ नाटक, उपन्यास, काव्य, प्रहसन, भाण आदि रचेजांय और उन पुस्तकोंका स्वत्व हिन्दी प्रेमी यंत्राध्यक्षोंको प्रदान किया जाय इसकारण सम्पूर्ण हिन्दी हितेच्छुक यंत्राधिकारी महाशयोंसे निवेदन है कि उक्त पुस्तकोंको प्रसन्नतापूर्वक प्रकाशितकर. मातृ भाषा हिन्दीका जीर्णोद्धार कीजिये और हमारे उत्साहको वृद्धिंगत कीजिये—

पं० सूर्यनारायण त्रिवेदी मंत्री,
" नागरी साहित्यरसिकसभा "
स्थान सदर बाज़ार
जबलपूर.

धन्यवाद।

हम अतिशय कृतज्ञतापूर्वक प्रगट करते हैं कि हमारे काव्यानुरागी पंडित श्रीसूर्यनारायण त्रिवेदीजीने हमारी प्रार्थनानुसार इस ग्रंथके संग्रह करनेमें अमित सहायता प्रदान कर हमें अनुबाधित किया, जिससे हिन्दीभाषा, काव्यरसिकानुरागी महाशयोंको भी इसका आनंद प्राप्त होगा, और वे देखेंगे कि वर्तमानसमयमें भाषा काव्यकी क्या दशा है, अंतमें हम अपने श्रीमान् परम सुजान खेमराज श्रीकृष्णदास योग्य बम्बई निवासी कोभी शतशः आन्तरिक धन्यवाद देते हैं कि उक्त महाशयने इस ग्रंथके मुद्रांकका सहर्ष स्वत्व स्वीकार कर हमारी विशेष सहायता की है.

स्थान
सदर बजार
जबलपूर

आपका कृपाकांक्षी,
बनवारीलाल गुप्त.

उपक्रम।



श्रीसच्चिदानंद आनंदकंद सर्वगुणाकर कृपासागर परमेश्वरको कोटिशः नमस्कार है कि जिसकी अलभ्यकृपासे आज हमारी मनोकामना परिपूर्ण हुई कि "काव्यरत्नाकर" ग्रंथ प्रकाशित हुआ, नागरी भाषाके प्राचीन एवं नवीन ग्रंथोंके संग्रह करने तथा रचनेमें हमारा स्वाभाविक अनुराग नित्य रहता है और अनेक प्राचीन वा नवीन ग्रंथ हमने सपरिश्रम खोज २ कर एकत्रित भी किये हैं उन सुन्दर ग्रंथोंके प्रकाशनार्थ भी हम सदा प्रयत्न करते हैं. परंच शोक है कि द्रव्याभाव और हमारे भारतवासी महाराजोंसे लेकर निर्धनतक सर्व सामान्यमें पाश्चमीय शिक्षाके प्रादुर्भावसे हमारी मातृभाषा देवनागरी (हिन्दी) की कैसी दुर्दशा हो रही है अस्तु, इस क्षुद्र ग्रंथके प्रकाश करनेका अभिप्राय यह है कि, बहुधा हिन्दी समाचार पत्रोंमें नित्य नवीन मनोहर समस्यापूर्तिके कवित्त वा सवैया अनेक विषयोंके अनेक काव्यरसिकों द्वारा प्रकाशित होते हैं और मनुष्य अज्ञानतावश उन सुन्दर काव्योंका अपमान कर रद्दीमें फेंक देते हैं जिससे कुछ लाभ नहीं होता है, इसकारण हमने यह विचार सपरिश्रम प्राचीन वा नवीन उत्कृष्ट कविता, भक्ति, शृंगार करुणा, वीर, प्रेम, हास्य, प्रभृति विविध रसोंसे परिपूरित संग्रह कर उक्त ग्रंथको प्रकाशित किया है. यदि काव्य रसिकानुरागियों की कुछ प्रीति इस ओर दृष्टि पडेगी तो शनैः २ हम अन्यान्य मनभावन और सुललित काव्योंके ग्रंथोंको भी प्रकाशित करेंगे. आशा है

कि काव्य प्रेमीजन इस "रत्नाकर" के रत्नोंको छांट अपने कंठका हार बनावें और शंख वा घोंघोंको निरुद्यमी मूर्खोंके निमित्त छोड़कर हमारे परिश्रमको सफल कीजिये और हमारा उत्साह बढ़ाइये; महाशय यद्यपि यह "रत्नाकर" है तौ भी यह न समझना कि शंख वा घोंघोंसे रहित है—

आपका बनवारीलालगुप्त,

स्थान सदरबजार

जबलपूर.

ता० २९–४–१५ इं०

श्रीगणेशाय नमः ।

समस्यापूर्ति रत्नाकर।



मंगलाचरण।

दोहा—आदिदेव दाता सुमत, वंदों दोउ कर जोर ।
दास जान रखियो कृपा, चितवत हौं तुव ओर ॥
शीशधरत तुव चरण पै, विनवत वारंवार ।
पुरवहु सब मनकामना, हृदय सुनेक विचार ॥
नहिं विद्या नहिं बुद्धि बल, और नहीं कछु ज्ञान ।
ग्रंथ समस्यापूर्ति यह, अवलोकहु धरि ध्यान ॥

सोरठा—विनवहुँ वारंवार, गणनायक गजवदनको ।
लघु मतिके अनुसार, संग्रह कर यह ग्रंथ शुभ ॥
संतनको कर जोर, विप्रनको परणाम करि ।
मति मेरी है थोर, कृपादृष्टि करिये सबै ॥

सवैया—गणनायकके पदवंदत हों अब वेग कृपाकर दुःखहरो ।
महाराज कृपा करो दीनन पै इमि नेक न यामें बिलम्ब करो॥
बनवारी पुकारत देर भई शंका प्रभु आनके तुरत हरो ।
दोऊ कर जोर करों विनती गणनायक आय सहाय करो॥ १ ॥
करिवर वदन सदन गुणके गणनायक बुद्धि विनायक हो ।
बनवारी कहे कर जोर प्रभु निज भक्तनके सुखदायक हो॥
हो बुद्धि प्रकाशन कष्ट हरन अरु दुष्टन हित भयदायक हो ।
मम लाज रखो निज दास जान गणनायक आय सहायक हो। २॥

समस्या १—हमहूं पै कृपा कबहूं करियो ।

श्रीनंदनंदन आनंदकंद सदाजन आनंद सों भरियो ।
मोरपखा मुरली बनमाल कपोलनकुंडल सों लरियो ॥
ज्यों गज द्रौपदी दासन पीर हरी बहुवारहिं त्यों हरियो ।
सो कविनाथ दया करिके हमहूं पै कृपा कबहूं करियो ॥१॥
चम्पकरूप कटाक्ष कटारसे कलिकंदसे दंतनसो भरियो ।
कंदुकभेन सजे कुच कंचुकी नवली त्रिवली की भली परियो ॥
नीवी नितम्बकी कान्ति छटा पै लटा मन भोगी नटा हरियो ।
कविनाथ भनै रति मूरतसी हमहूं पै कृपा कबहूं करियो॥२॥
सुनो उद्धव योगको जाल कहां लौं फैलायके गोपिनको छरियो ।
नहिं एक चलेगी तिहारी यहां कै अनेक उपाय नहीं तरियो ॥
शिवकी यह बात अलीक नहीं तुम चेत सोया चितमें धरियो।
यह जाइके गोपीसँदेश कहो हमहूं पै कृपा कबहूं करियो॥ ३ ॥
अक्रूरके साथ हो जात जो नाथ तो क्रूरस्वभाव नहीं धरियो ।
बिनवों पग लागिके तोहिं लला पुनि गोकुल आनँद सों भरियो॥
बिरहानलज्वालको ताप महा दिनचारिमें आइके सो हरियो ।
शिवहू करजोरके टेरत है हमहूं पै कृपा कबहूं करियो ॥ ४ ॥
दलि दारुण दारिद दुःख घने चित चिंतितक्लेश कबै हरिहो ।
गृहभार अपारकि व्याकुलता तनु दुर्बलते कब धों टरिहो ॥
कबधों भवशोक तरंगनिते क्षमिके अधमों तरनी तरिहो ।
दृगफेरिफते सम दीननपै प्रभु दृष्टि दया कबधों करिहो ॥ ५ ॥
कबधों निजभाव अनुग्रहते शरणागतमें करुणा धरिहो ।

दुखदायक भासिक अल्पअहै कवधौं यह आपतिको हरिहो ॥
सब पातक नाथ क्षमा करिके मम कारजको कवलौं सरिहो।
दृगफेरि फते सम दीननपै प्रभु दृष्टि दया कवधौं करिहो ॥६॥

समस्या २—केहि कारण पानीमें आग लगी—

रघुनन्दन सिंधुसमीप खडे मग मांगत बानि बिनीतिपगी।
दिन तीन गये विनती न सुनी प्रभुके रिसि राशि हृदय उमँगी ॥
बलदेव सजो धनुबान जबै तब सागरमें अति ज्वाल जगी।
दधि डोबनको रुख राम कियो यहि कारण पानीमें आगलगी।१।
जब देव अदेव पयोधि मथ्यो तब देश हलाहल भीर भगी।
हरिकूदि परे यमुना जलमें उगल्यो विषनाग सो देह दगी ॥
जबलंक दह्यो बलदेव तबै बरखे घन औरहुँ ज्वाल जगी।
बड़वानल सिंधुबसे नितही यहिकारण पानीमें आगलगी ॥२॥

समस्या ३—केहि कारण शेषके शीश हजार—

कद्रू कश्यपकी पतिनी पतिसेय प्रसन्न कियो यकबार।
नाग सहस्र मेरे सुत होइँ यहै बर दीजिये मोहिं उदार ॥
सो सुनि आशिष दीन्ह ऋषै बलदेव अनन्त लियो अवतार।
एकमें अंश सहस्र हूं को यहिकारण शेषके शीश हजार ॥१॥
जो भगवन्त अनन्त कहावत जासुके अंग सहस्र विचार।
सो सहसानन रूप भयो फन एक धरयो बसुधाकर भार ॥
गान करे बलदेव नितहिं परमेश्वरके गुण नाम अपार।
छन्द अनेक उचारणको यहि कारण शेषके शीश हजार ॥२॥

समस्या ४—प्रीति पुनीति भई परतीतसो—

पर्यंक पै जात लजातसदा नहीं गात छुये पतिको सुठिप्रीतसों ।
मुख घुंघटही में छिपाये रहे नहीं नाह सों नेहकरे पुनि हीतसों ॥
शिव कोटि उपाव करै तबहूं नहिं बैनकढै कबहूं रसरीत सों ।
अलीसोई ललीको लखेकिनआजसोप्रीतिपुनीति भई परतीतसों १

समस्या ८—मानो पानी परो कुम्हलानी लतामें—

पिय जायके छाय विदेश रमें दिनरात रहौं उनहींके पतामें ।
प्रेमके फंदकी फांसीपरी उननाम रट्यो मैं मंद गतामें ॥
इक प्रातकी बात सुनी सजनी जब जात नहानको गंगतटामें ।
उन्हें आवत देखके मग्नभई मानो पानी परो कुम्हलानी लतामें १

प्रभुपुरको इक ब्राह्मण भेज नहीं प्रभु आये रही दुचितामें ।
राक्षसने कर कीन्हो जो हाथ भयो यह जीव सदा विपतामें ॥
रुक्मिणी होय अधीर विशेष पै ध्यान दियो प्रभुकी प्रभुतामें ।
प्रभुआगमविप्रसुनायो जो आय मनोपानीपरोकुम्हलानीलतामें २

रास समय नंदलालने खेल अनोखी रची सबही वनितामें ।
अतर्ध्यान भये क्षणमें जब देखी सखी सबही ममतामें ॥
स्तुतिठानि अनेकन भांति कही प्रभु नाहि कोउ समतामें ।
प्रगटे गोपाल मुदित सखियां मनो पानीपरो कुम्हलानीलतामें ३

यूथके यूथ जो भूप लगे सब एक ते एक बडे प्रभुतामें ।
शंभु शरासन टारिसके नहिं भीजत हैं कर एक मतामें ॥
श्रीरघुनन्दन भंज्यो चाप नहीं कोऊ एको रह्यो समतामें ।
यहविलोकिसियाजी मग्नभई मनोपानीपरो कुम्हलानीलतामें ४

उन्नतिकी रचिरंच विलोक सो आश उमंगधसी ममतामें ।

बीजबयो जिन बीर वैधन्य करो सब सींच मिले इकतामें ॥
कालके तेजसे जाय न सूख रहे न उपाय कछू कमतामें ।
आज भयोमन येतो आनंद मनो पानी परो कुम्हलानी लतामें।५।
अनेकनबीर सनेरसबीर अनेकसने रसकी कवितामें ।
अनेक वियोग अरु प्रेमसने सो अनेकन हास्यसने लहितामें ॥
अनेकन रौद्रको भावबताय सनो यह शब्द विधो जगतामें ।
मेलकियो यों होयगो हर्ष मनोपानी परोकुम्हलानीलतामें ।।६।।
धीर धुरीन धरा अधार गयो गढ़ लंककी हेमछटामें ।
आयो त्रिलोकीनाथ जबै घननाद प्रहार कियो है गदामें ॥
शंभुकी शक्तिको मान दियो अरु खेंचलयो तब होत नशामें ।
देख दशा लघु भ्राताकी उन मनो पानीपरोकुम्हलानीलतामें॥ ७॥

समस्या ६ —करमीजत भामिन हेतु न जान्यो—

लंकेशने सीय हरी प्रभुकी निजमुक्ति विचारके बैरजो ठान्यों।
निजरानीनेदीन्ही सलाह अनेक पै अंत बिचारिकेनेकनमान्यों ॥
बहुभांतिबिचारिकेजानिलयीपियशीशपै आयकेकालतुलान्यों।
हाय दई कह हाय दई कर मीजत भामिन हेत न जान्यों॥ १॥
एक समय यमुनातटमें गोपाल जू जायके रास जो ठान्यों ।
गोपिका मान भयीं जबहीं मनमोहन ते बहुमान जो ठान्यों ॥
गर्व प्रहारी जू देखो जबै सब गोपिन जीवमें गर्वसमान्यों ।
अंतर्ध्यान भये प्रभुजी कर मींजत भामिन हेत न जान्यों ।२।
सबदेख विचारकरें मनमें प्रण है दृढ ये मिथिलापतिठान्यो ।
नहिं सीयविवाह विरंचिरच्यो यह खेद सबैहिय बीच समान्यो ॥

नारि समाजमें धूममची नहिं जानतबर परब्रह्मलिखान्यो।
हाय दईकर हाय दईकर मींजत भामिन हेतनजान्यो ॥ ३ ॥
आई छबीली छटाको बगार अटा चढ़ भारत सुखपलान्यों।
रूप विचित्र विलोक थके अरु रीझपचे कछु स्वाद न भान्यों ॥
नेहको नातो गयो बढ़ बेग सुकेल कुटुंब करै मन मान्यों।
हार प्रतीत गई हियमें कर मींजत भामिन हेत न जान्यों॥ ४ ॥
राजतथे सुखके सब साज अरु गाजतथीं विया मन मान्यो।
द्रव विलोक द्रवैबहु लोग गये हिय हारिमिल्यो न ठिकान्यो॥
नेहको मेह भरो सब गेह बिदेह हो मेल शरीर समान्यों।
हाय भयो कहभारत आज कर मींजत भामिनहेतनजान्यों ।५।

समस्या ७–हमसे तुमसे अब काज कहा है–

नहिंकानकियो जो पियाने कह्यो अवधेश परिक्षहि लीन्हचहाहै।
धारि सिया वपुबाद कियो प्रभुसे यह कीन्ह अनर्थ महा है ॥
भाव सुभक्ति विचारि हिये तज शंभुसती श्रुति पंथ गहा है।
सुन प्राणप्रिया इहि हेतुविषै हमसे तुमसे अब काज कहा है १
करके करार गयो निशि आवन आयो जो लालप्रभात यहां है।
बात सुने हरि हाथ गहे उर नागरि छायो अनन्द महा है ॥
झक झोरत बांह किये रिसऊपर बात भली ये सुनाई कहा है।
जहँ रैन बसे तहँ जाव लला हमसे तुमसे अब काज कहाहै।२।

समस्या ८ –पहिचानत हैं तेहि लानत हैं–

झकिमारनको बनि ब्यासकै पंडित वेद पुरान बखानत है।
करिदान अनेक नहायके तीरथ पुण्य कहानिन छानत है ॥

हरिचन्द्र जू प्रेम नहीं हियमें वृथा भ्रमकी वह जानत है ।
परमेश्वर कौन जुपै जगमें पहिचानत है तेहि लानत है ॥ १ ॥
मनैं जो मनमोहनके सँगको तिहिको फिर फेरके आनत है ।
अरुझाइ चुकी दृगताहि कोऊ जगमें सरुझाइबो जानत है ॥
जब प्रीतिको प्रेत लगै सजनी कि सिखावन मंत्रते मानत है ।
यह आसव पीके पतिव्रतको पहिचानत है तेहि लानत है ॥ २ ॥
यह ऊधव श्याम सखा है सखी पर प्रीतिकी रीति न जानत है ।
विजया धसि ज्ञानको छानभलै ताजि आनन नाकसों पानतहै ॥
हम लोगनसे कहैं योग करो सबते बड़ योग बखानत है ।
उलटी बुध प्रेमतो योग बड़ो पहिचानत है तेहि लानत है ॥ ३ ॥
समस्या९—जायतोजायभलैतनजोपरकैहूं नहींहमरोप्रणजाइगो-
आजलों जो न मिली तुमसों धरि धीरहिये दुख द्यौसबिताइगो ।
ताइगो तेरो शरीर समीर वियोगलता तबहूं मुरझाइगो ॥
आश मिलाप धरे रहिये जगमोहन एक दिना मिलजाइगो ।
जायतो जाय भलै तन जो परकैहूं नहीं हमरो प्रण जाइगो ।१।
होय न जैसी लिखी करतार लिलार हमारे डरों न डराइगो ।
बूड़ै चहे कुल कान अली निज बात न हौं कबहूं बिसराइगो ॥
पै जो कही जगमोहनसों मिलिहैं मिलिहैं नहिं अंतर ताइगो ।
जायतो जाय भलै तन जो परकैहूं नहीं हमरो प्रण जाइगो ॥ २ ॥
काहे न धीरज धारे रहो इक द्यौसतो हों मिलिबोहुलसाइगो ।
आवेघरी घरी वाही घरी जब जीवनको सुखहू तुम पाइगो ॥
सोइयखोइ संदेह सबै जगमोहन एक दिना बिलसाइगो ।

जायतो जाय भलै तन जो परकैहूं नहीं हमरो प्रण जाइगौ ॥ ३ ॥
तेरो धरे नहिं धीरज हीयतो हो हीं सदा विरहागी जराइगौ ।
कैसी करों धिक प्राण औ कानहिं जाके रहे सबही बिनशाइगौ ॥
एक रही मिलवेहीकी आश सोहा जगमोहन बाहि लगाइगौ ।
जायतो जाय भलै तन जो परकैहूं नहीं हमरो प्रण जाइगौ ॥ ४ ॥
देखो अली वह जीवनमूरिसो कैसो हमें हँसिके तरसाइगौ ।
नैनसों नैन मिलायके भौंह कमान लों तान कहूं विरमाइगौ ॥
होंतो विकी जगमोहन हाथ तो होय जो मेरे लिलार लिखाइगौ ।
जाय तो० ॥ ५ ॥
जो२कही तुम दीन्ही लिखी मिलि हैं तुमसों सुई क्यों बिसराइगौ।
जो पै कही समुझावनहींके लिये पुनि क्यों विश्वास जनाइगौ ॥
जो न पतिआवे कही अपनी जगमोहन पाती कहोतो दिखाइगौ ।
जायतो जाय भलै तन जो परकैहूं नहीं हमरो प्रण जाइगौ ।६।
ह्वैकेअधीरलिखीपतियांकबको मिलिबो तुमसों ठहराइगौ ।
बात बनावती रोज सुनो हँसिके सबही विधजीव हराइगौ ॥
बीते निते जगमोहन द्यौसनिशाविरवाह है क्योंतरसाइगौ ।
जाय तो जाय० ॥ ७ ॥
कैयकबार लिखीं प्रणके अब तो भला पूरो करोउरझाइगौ ।
हाय दई सहिये किमि पीर विना तुम द्यौस सुनो नियराइगौ ॥
चाहतप्राण चले जगमोहन फंद फँसे अबको सुरझाइगौ ।
जाय तो जाय० ॥ ८ ॥
जो अब पूरी करें न अहो सजनी रजनी दिनदूनोदिखाइगौ ।

औधि विसासनि दीन्हीं कहूं जगमोहन जीवजरोअकुलाइगौ॥
पावत कोटिकलेशतऊवरुपिंजर प्राण शरीर उडाइगौ ।
जाय तो जाय०॥ ९ ॥
जो मन तेरे दगाही रहे जगमोहन नेहतगान लगाइगौ ।
पै लगी छूटे ते छूटे भले जब प्राण शरीरहि संग छुटाइगौ ॥
काहे लिखी पतियां बदकै करकै गहिरो प्रणधीर धराइगौ ।
जाय तो जाय भलै तन जो परकैहूं नहीं हमरो प्रण जाइगौ।१०।

समस्या १०—हारहियेको सम्हारन लागी—

सोई हुती नवला परयंक पै शंक बिना सबरैनकी जागी ।
वाके छुटे कुचपै कच श्यामल वेदी सरोरुहआनन रागी ॥
तौलों परी पग आहट कान सनेह भरी रस पीयके पागी ।
चौंक उठी जगमोहन केश औ हार हियेको सम्हारन लागी।१।
सोई निशंक जहां परयंक बितान कलिन्दकापी अनुरागी ।
फूली निवारीजुही जलकूल लख्यो जगमोहन स्वप्नमें पागी ॥
प्यारी गह्योकर चुम्बन लै पपिहा सुनकूकसुचौंकके जागी ।
नींदकेडारे रह्यो मन अन्त सुहार हियेको सम्हारन लागी। २।
पी परदेश मरूंकर यौसकटे ग्रहकाज भयोदुख भागी ।
ज्यों त्यों भई रजनी अपनी सजनी समसाजिके सेजलेजागी ॥
ध्यान धरै टुक नींदलगी मुरलीधर आपकह्यो विरहागी ।
जानि उरोज खुले जगमोहन हार हियेको सम्हारन लागी। ३।
बैठी वधू जगिके उठि सोवत मींजतहाथन नैननरागी ।
भूली शरीर दशा सजनी संग प्रेम अलाप विलापमें पागी ॥

चेत रह्यो न कहां अचरा जगमोहन आयो तहां अनुरागी।
चौंकी चितै झट घूघटलाय सुहारहियेको सम्हारन लागी।४।

समस्या ११—कृपाकर दीनको दास करे रहो—

जबलों तन प्राण वसे तबलों शुचि धर्म विचार सुधीर धरेरहो।
बलदेव सदा उपकार दया दृढ संगति साधुन साजसरेरहो॥
सुख हर्ष विषाद समानसहो शिर अंक न पै परतीतिपरेरहो।
निशिबासर ईशसों यो विनवोकि कृपाकरदीनकोदासकरेरहो१
सुनिकेबिनती बहु बाल बली कहराम उठोसुखसों बिचरेरहो।
हम चाहत ना कछू और प्रभू यहि अंगदको बलिबांहधरेरहो॥
जबलों न तजों तन ह्यां तबलों मुनिमान. हंससुयोहिंखरे रहो।
जनमोंज्याहि योनि तहूं बलदेव कृपाकर दीनकोदासकरे रहो२
अब जाहु सखा अपने गृहको नितनेम हिये ममध्यानधरे रहो।
सुनिके अतिशोच भयो मन अंगद आयसुतात शरण्यपरेरहो॥
पदपंकजको तजिजाऊं कहा प्रभु बांहु गही सुसहीपै अरेरहो।
जल मैन भरे विन्ती बलदेव कृपाकरदीनकोदासकरे रहो॥३॥
परतीत सुप्रीति सुधारेहु रामहि रामहिके पथप्रेम परे रहो।
पद पंकज ध्यान सदा उरमोंएक रामहिंको करिआश अरेरहो॥
गुणज्ञान निरंतर रामहि त्यों फलजीवन पायमहीविचरेरहो।
बिन्ती बलदेव सुदीन दयालु कृपाकर दीनको दास करे रहो।४।
जबलों जनिहोनहि ईश उदार विकार ग्रसेकलिज्वालजरेरहो।
तन मानुष लै धिक जीवनह्वै खर शूकर श्वानहिं तेइ तरे रहो॥
मद मोह दुराशभरे बलदेव निरंतरही भवफन्द परे रहो।

सुख होय तबै भजिये प्रभु पाहि कृपाकर दीनको दासकरेरहो।५।

समस्या १२ वीं। धूम है फिरंगनकी—

लाट बन बैठे हैं मुलुक दाद सुनिवेको हाईकोर्ट मुंशफी अदालतादि रंगनकी। हाकिम हमेशा सांच किंज़िब विचारे वेश आगही आईन आछे मामल तरंगनकी ॥ गोरेशाही सेनापति दरवार सुदेश देश जीतत नरेश बलदेव सुउमंगनकी। दखल दुहाई विक्टोरिया फिरां हैं चारु चित्त चाह चाकर सुधूम है फिरंगनकी ॥ १ ॥

काबिल कचहरी फिरंगही हुक्कामन हैं बने हैं फिरंगही जमात शाह जगनकी। मुलुक मतांहेदी सुलाटहू फिरंगी है कौशली अनेक इन्तज़ामी हैं तरंगनकी ॥ शहर २ देश देशन दखलदारे सीधी लैन रेल्वे चलावत उमंगनकी। दौडरहीं बग्गिन सुठेल टमटमादि ट्राम कहैं बलदेव देखो धूम है फिरंगनकी॥ २॥

बखत हुमायूं सु अशोकसिंह महाराज बीरसेन चक्कवै व ठालसेन जंगनकी। भूपति घनेरे लक्ष्मणसिंह की न चेरे शाहन सिकंदरसे तखत तरंगनकी ॥ मुहम्मद औरंग वो सुलेमान शेरशाह, कवि बलदेव जाह दीखत उमंगनकी। दंगन दमामें त्यों बिलाने वेशशाहनको आयो राज्यकंपनी सुधूमहै फिरंगनकी॥ ३॥

समस्या १३ वीं। बंक चितौनि चितै मुसकाई।

बैठी हती सजनी गनमें सज नीके बनाय हिये हरषाई।
त्यों तेहि औसर मांह सुजान जु आय गयो तेहि ठांव कन्हाई॥

देखि हियो मनमत्थजगो दुरिवेहित कांकर लाल चलाई ।
सोहे सखीनके रोष कियो इत वंक चितौनि चितै मुसकाई।१।
मैनकी मूरतिसी ललना निज मंदिर सोवतथी सुखपाई ।
ताहि समय पिय प्यारे सुजान जू आय तहां रतिबात चलाई॥
लाज मनोजमें पागि गई तिय हां नहिंनाहिं कछू न बसाई ।
प्यारे तऊ निज बात लही जब वंक चितौनि चितै मुसकाई।२।
गौनते मौन पिया दुलही रही मौन ते वैठि हिये दुखपाई ।
त्योंहिं सुजान जू जावक दैनको नाइन सासुरेकी तहँ आई ॥
माडि महाउर चित्रितके पग हासिबेको इमि बैन सुनाई ।
प्यारे परे रहैं पाँय तिया सुनिबंक चितौनि चितै मुसकाई॥ ३॥
सोवत राधिका थीं सुखसेजपै आयगये तेहिं ठांव कन्हाई ।
वेगि जगाय अचानकही रतिरंगनकी तहँ बात चलाई ॥
भाषत गंगापरसाद यही तिय देखत श्याम गई सकुचाई ।
लाज भरी कछु बोली नहीं पर वंकचितौनि चितै मुसकाई॥ ४॥

समस्या १४ वीं । तेरी सों आंख पै आंखन देखी ।

देखी आंखें उन पक्षिनकी अरु कीर पतिंगनकी बहुदेखी ।
देखी हैं केतिन वेश्यनकी अरु रानिनहूकी अनेकन पेखीं ॥
पेखीं बहूतक पश्शुनकी जलजीवनकी तो करोरिन लेखी ।
लेखी गंगापरशाद सबै पर तेरी सों आंख पै आंख न देखी॥ १॥

समस्या १५ वीं । हायबालरेंजासीकरेजाकाढि लेगई—

सुन्दर स्वरूप चन्द्रवदन अनूप लखि जात मोहि भूप ऐसो रूप

बाढ़ि देगई । दाडिम दशन मृदु प्यारकी हँसन चित चाहकी फँसनमें कसन गाढि कैगई ॥ केसर तिलक घुंवरारीसी अलक दिखलायके झलक चित्ररूप ठाढि कैगई।नैनसैन नेजा वच्चूराम चित रोजा वह हाय बालरेजासी करेजा काढ़ि लेगई ॥ १ ॥

चम्पक वरन अति कोमल कमल राशी दीपत शिखासी ज्योति अंगमें उदै भई । देखत स्वरूप शीघ्र मोह जात रूपमान छूट जात ध्यान ज्ञान चेटक सों कैगई ॥ झांकिके झरोखे झलकाय छवि चोखे युग भ्रुकुटी चढायकें झटाकट देगई । बच्चूराम नैननकी सैनन चलाय बान हाय बाल रेजासी करेजा काढिले गई ॥ २ ॥

केशर सों अंगपर केशरके रंग सजे मोती गुहे मंग रति रंग रूप ह्वै गई। रम्भासी रमासी मेनकासी मृदु सोहे गात शचीसी उमासी सुखराशी ज्योति कैगई। तडित तरंगन सों अंगन श्रृंगार शुचि रूपको दिखाय प्रेम प्रीति बेलि बैगई । बच्चूराम नैननकी सैनन चलायबानं हाय बालरेंजासी करेजा काढि लेगई ॥ ३ ॥

गौर गात कोमल कलित वैस बारी बीच दीपक शिला सों द्युति चित्तमें चुभै गई । अंगन विभूषन सुरंगन वसन छवि जोवन तरंगन मतंग गति है गई ॥ चन्द्र मुख उज्ज्वल कुरंगदृग दीरघ पै दाड़िमदशन देखि सुमति नशै गई । रंग रूप वैस बैन सैन पञ्चबान मारि हाय बाल रेजासी करेजा काढि लैगई ॥ ४ ॥

समस्या १६ वीं। यह अवाई जान कामकी ।

करि मुख ओट पट पेखति उरोजतन पग गति विविध क-राति बाल बामकी । भूषन सजित अति मधुर वदति बात सो-रहों-शृंगार कला बारहों ललामकी ॥ कहैं द्विज रसिक सुप्रेम-को वधिक करु बेकल पथिककत कहौं रसनामकी। चरचा चबाई बात शुभगो बनाई कहु कतहूं न पाई यह अवाईजानि कामकी ॥ १ ॥

जाय जिन गोकुल सुन सखी मैं बुझाऊं तोहिं चोर वटपार पन्थ लगे रहें शामकी।तामें तू अकेली कोउ सहेली नहिं तेरे साथ लोक लज्जा होवेगी पिताके तेरे नामकी ॥ भूषन जडाऊ जेते जडे तेरे अंगनमें इन्हें कमजाने तू यह सब है बडे दामकी । येते के सोच नहीं माने मैं तो हर्षराम पै यह शोच दाहत है अवांई जान कामकी ॥ २ ॥

कलित कलीन कस किंशुक ललित वन बिछी सो फरस रस बसवसु जामकी । चांदनी तनी सो चन्द चांदनी चहूंघा चारु चञ्चरीक चारन चपल मत वामकी ॥ कविसितकंठ कहैं कोकिल कुहुक हैन कूक शूरवीरन सुनाई गति बामकी । लाईना अबेर मान गढ़पै चढ़ाई फेर सुरभ सुहाई न अवाई नृप कामकी ॥ ३ ॥

छाई तरुणाई रंग रूपकी निकाई अंग अंगन तरंग दरशाई छविधामकी । चंचल चलाई मंद २ मुसकाई अरु दृगनकी श्यामताई वाम अभिरामकी॥फबत "फतेह" फेर बसन सुगंधताई

चाह अधिकाई बरभूषणललामकी। ऐसी गतिलाई रुचिमोहकी प्रबलताई बैस या सुहाई में अवाई जानि कामकी ॥ ४ ॥

समस्या १७ वीं। सोई वीरताई है।

धीर चितधारै सब इन्द्रिन को मारै"फते"बुद्धि को सँवारै करि शीलकी दृढाई है। सकल बिकारै तजि सत्यको सुधारै जगजालको बिसारै हरिभक्ति अधिकाई है। पर उपकारै ब्रह्म जीवके विचारै तजि मांसको अहारै जीह जाय में जमाई है। विषय निवारै भ्रम खेद भेद टारै जोई ऐसे उपचारै रुचि सोई वीरताई है ॥ १ ॥

तनुके सुदेश में महीपति स्वतंत्र मन मंत्रिन विवेक रुचिरोपं की सुनाई है। वञ्चक अनेक पञ्च विषय विकार अरु इन्दिन के गुण यह आत्मा रिझाई है। कहत "फतेह"एक मनहीको जीते पुनि इन्द्रिन को त्यागे सुख जीव मुक्ति पाई है। कामजीत क्रोधजीत लोभ मद मोह जीत पांचहू को जीते तब सोई वीरताई है ॥ २ ॥

लेतही कमान निज समान नपीजाने भूमि अर्ध मुख डोले फिरे जैसे कोई नाई है। बाटिका तडागनके पक्षिनको मारै आप सोरकर मारे घर आपे निज दाई है। माई औ भौजाई भाई सबनको मारै खूब दुर्बल को मारै जैसे चढे भूत बाई है। सुनतही मुहीम को अफीम की तयारी भई हरषराम कहें कहो यांही वीरताई है ॥ ३ ॥

सुनत ही नगाडे चोप उठे वेखौफ आप मनमे उछाह मुख कमल सों छाईहै! जूझिवे को चाव पांव टरत नहीं पाछे को मोर तोर मारे चोट कोटि भहराईहै। राखे नहिं औड़न औ करोड़न में घमशान है गज कोट एक रामकी दुहाई है। रुण्डनते कृपान सान छूटे नहीं शूरमा की हर्षरामकहो वीर याही वीरताई है॥ ४॥

समस्या १८वीं। बैस तो सिरानी पै न मानी वात ज्ञानी की।

वालही समयते अन्ध फन्द सब करन लागे भागे निज धर्महि ऐसी वदनामीकी। तियनके संग रंग ढंग में वितायो दिन फूले फूले फिरत वात बकतेहैं ज्वानी की। आंख में अंधेली औ अधेली की न भूली सुध मेरी२करते वरवाद जिन्दगानीकी। हर्षराम कहें प्रभू ध्यान में न लायो शठ बैसतो सिरानी पै न मानी वात ज्ञानी की॥ १॥

जानी अनजानी की निशानी नहिं जानी कहूं मति घबरानी मनो गति बड रानी की। मानत कहानी वेद वानी नयमानी भयो ऐसो अघखानी वदै मानींवेईमानी की। कहे सितकंठ तेरी स्यानप भुलानी सब हितकी न मानी न प्रमानी पहिचानी की। एरे अभिमानी महामूरख अज्ञानी तेरी वैस तो सिरानी पै न मानी वात ज्ञानी की॥ २॥

समस्या १९ वीं। मुरारि पै प्राणको वारि चुकीं।

सब हांसी करैं डगरी डगरी गरे प्रेमकी डोरि तो डारि चुकीं।

कुलटा कहलाय चुकीं सजनी कुलकी कुलकानि बिगारि चुकीं। फल होत कहां समझाइबे में अबतो सब सामुझ जारि चुकीं। कर ऊंचो उठाय पुकार कहों मैं मुरारि पै प्राण को वारि चुकीं। ॥ १ ॥ अबतो जगमें खुलिहै चहुंधा मन प्रेमको पूरो पसारिचुकीं। कुलरीति औ लोक की लाज सबै हरिचन्द जू नीके बगारि चुकीं। वह साँवली सूरत देखतही अपने सरवर वाहि हारि चुकीं। जग में कछु कोउ कहो किनहोंतो मुरारि पै प्राण तो वारि चुकीं। २।

समस्या २० वीं। उपकार कहावत कौन पदारथ।

काल परयो हरिचन्दके राज्यमें सरवस दीन्ह गँवाय प्रजारथ। त्यों बलि भूप उदार फते करि दान कियो सब वश कृतारथ। इन्द्रके काज दधीचि दियो तनु गीधको प्रान पयान सियारथ। दानमें लोभ कियो न कछु उपकार कहावत याहि पदारथ॥ १॥ खाइ खवाइ सकै न कछू सब जोर छिपाय धरें नहिं स्वारथ। अन्त फते सब छोड चले अरु खाय बहायहै लोग अकारथ। सोचहुँ आपहिं भूल तबै जगमें कछु ह्वैन सक्यो परमारथ। लोभमें जानो नहीं हमने उपकार कहावत कौन पदारथ ॥ २॥ बाग लगाय बटिहिनके हित कूप खुदाय कियो परमारथ। मन्दिर ताल रचे पथिकालय भोजन वस्त्रदियो धर्मारथ। जारीहै पुण्य प्रवाह फते सब दुःख उठावत हो परस्वारथ। ताहू पै पूंछत औरनते उपकार कहावत कौन पदारथ। ३। लोभ में झूल रहो निशिवासर ताहि से ह्वै न सक्यो परमारथ। बैठि कुसंगत

ही में फते निज खोइ चले सब आप अकारथ । ज्ञान गुरू को धन्यो नहिं कान सुदौर थके जगहीं के सुखारथ । आजही चेत भयो सुनते उपकार कहावत कौन पदारथ । ४ । जीव सतावन पाप कमावन वैस वितावं मचायके भारथ।धर्म अधर्महि साथ चलै अरु जे जगधंध यहीं के सुखारथ। प्राण छुटे बिलगातसबै यह गातहूं साथ न जात सहारथ । तौहु न चेतत चित्त फते उपकार कह्हावत कौन पदारथ ।६ मातु पिता सुरभी सुर भूसर क्षिक्षिक सेइके होत कृतारथ । धर्मके कर्ममें लीन रहै वर पावत अंत में सर्व महारथ । दीनन के दुख दोष हरै भरि शक्ति सदैव करै परस्वारथ । औरन के हित हो जिहिं में उपकार कहावत तौन पदारथ ॥६॥श्रुति चारहु शास्त्र छवों दश आठ पुरानहूं दीन्ह लगाइ यथारथ । कारज सों करनी जो हुवै अपनी अथवा पर के परमारथ। सो सब निवृति याहि सुग्रथनि ते करते न गयो श्रम कारथ । बूझो बह्यो ना आई तुम्हे उपकार कहावत कौन पदारथ।७।बालापन में साधुन सन्तनके हम टारत राह हरारथ।ज्वानि में त्यों बहु कूप खनाय लगाये सुवागनको परमारथ । वृद्धि में वारि औ अन्न के दान हूं देइ दिवाये सदा उपकारथ । तापें कहो उपकार करो उपकार कहावत कौन पदारथ॥८॥भीम युधिष्ठिर वीर भये निज प्राणहि तुच्छ गिन्यो परमारथ । दान दियो बहु ब्राह्मणको उपकारके हेतु तज्यो न संत्यारथ ॥ नृग ने किये अपराध अजान परे यहि कारण कूप अनारथ । मैं नाहिं जानत

और कछू उपकार कहावत कौन पदारथ॥९॥ पूजी नहीं अभिलाषें जबै अति गर्व कियो देवराज पदारथ। मेघ बुलाय कह्यो रिसयाय अबै तुम जाय करो ब्रजगारथ। आयसु पाय चले घन धाय सबै यदुराय कह्यो न अनारथ। लीन्ह उठाय पहाड प्रभू उपकार कहावत याहि पदारथ।१०. रावण दुष्ट हरो हरि सीतहि श्रीहनुमान सह्यो न अनारथ। लंक जरायके खाक करीं हति कोटिन राक्षस मर्दि यथारथ। शक्ति लगी उर लक्ष्मण के गिरि कोहि उपार लियो परमारथ। लाजतहीं सुन बात यहै उपकार कहावत कौन पदारथ॥११। हे कवि कोविद ज्ञान सुजान सनेहसमूह कृपालु यथारथ। भूषन वंश प्रकाशक अंश बितावन हारन कांल अकारथ। मो मन शंकहि दूर करो गंगापरशाद कहैं पर स्वारथ। ध्यान लगाय विचार करो उपकार कहावत कौन पदारथ॥१२। रावण जानकी जाय हरी तब गिद्धने प्राण दिये परस्वारथ। धेनुके हेतु दिलीपहुने बिचकाननके हरिसों कियो भारथ। देह को दान दधीचि दियो गंगापरशाद कहें उपकारथ। पण्डित कुंदनलाल सुनो उपकार कहावत याहि पदारंथ। १३॥

समस्या २१ वीं। कहु काके वियोग विभूति रमाई॥

प्यारी वियोगके ताप तपी मृग चर्मके आसन लीन्ह बिछाई। नेत्र सुअच्छके बिन्दु मणी इक आशके धागन माल सुहाई। आई सुयोगनि रूप धरे सखियान के द्वारे समाधि लगाई। पूंछें लगीं ब्रजबाला सबै कहो काके वियोग विभूति रमाई।१। प्यारे

हमारे गये जबते लिखी पाती कबौं नहिं मोहिं पठाई।आश उसासकी सास जिओं उन प्रीति की रीतिं सबै विसराई । शोचति यो निज मानस में सखियान मिलीं करमाल सुहाई।पूछें लगी ब्रजबाला सबै कहो काके वियोग विभूति रमाई।२। काहू वियोगनी रूप धरे सखियानके द्वारेहिं फेरी लगाई । नाम जपै प्रिय नामहि को तुलसी कर माल अहै छबि छाई ।दंड कमंडलुहस्त लिये कटि बीचहि सूहर भंज सुहाई । पूंछे लगीं ब्रजबाला सबै कहु काके वियोग विभूति रमाई ॥ ३॥छैल छबीले के प्रेम पगी हम ताके बिछोहन लाज गमाई । काम दवानल देह दगी अशुआन की माल विरागन पाई।तूकर चन्द कपाल गहे धवली कृत अंगन ज्योति जुन्हाई । बावरी रात सों बात कहे कहि काके वियोग विभूति रमाई ॥ ४ ॥

समस्या २२ वीं । केंहि कारण रूप धरो गिरिधारी ।

घने दानव भूमि पे बाढे जबै तहँ भूमि गऊ बन दीन्ह पुकारी ।
बाणी अकाश भई परब्रह्म की संत गऊ की करों रखवारी ।
होतो अजन्म अनूप अदेह अनादि अलेख विभव उपचारी ।
भक्तन को वर पूर्व दियो यहि कारण रूप धरो गिरिधारी । १ ।
एक अखंडित व्यापक ब्रह्म अरूप अदेह अनाम अपारी ।
सो लख भक्तन की चित चाह स्वरूप धरे पै रहे अविकारी ।
निर्गुण ब्रह्म उपासक निर्गुण ध्यान करे गत आप विसारी ।
सर्गुन भक्तन पै कीं दया यहि कारण रूप धरो गिरिधारी ॥ २ ॥

कोप कियो सुरराज जबै वर्षावत मूसल धारन वारी । व्रजके
सब लोग लुगाई भजे बिललात फिरैं अति आतुर भारी ।
सब गोप गुवाल स्वगौवन लै मधुसूदन पास करी जो गुहारी।
राम नरायण देखे दुखी यहि कारण रूप धरो गिरिधारी।३।

समस्या २३ वीं । काहे गही इतनी निठुराई ।

नित सांझ सवेरे हमारे यहां तुम आवत थे तब आप कन्हाई।
हियमें लगि ताप बुझाकै सदा सुखदेत रह्यो मुख चन्द दिखाई।
जानी न जाय कछू मनकी प्रिय काके समागम रैन गँवाई ।
प्राण पियारे कहो हमसों अब काहे गही इतनी निठुराई ।१।
कौन उपाय करौं मैं सखी उन कान्हर को किन दीन्ह ढिठाई
कोट गरीबी में ताप कहों तऊ आवे न नेक हिये करुणाई ।
कैसी अहै वा प्रवीन त्रिया मन मोहन को निज प्रेम लगाई ॥
कैसेहू भूल भई न हती उन काहे गही इतनी निठुराई । २ ।

समस्या २४ वीं । प्यारी की दृष्टि है काम कटारी ।

को अस शूर जने जग जौन लगे करि आह परै दुख भारी ।
देखहु खोज सुशील तिहूं पर भाषत हाथ उठाय पुकारी ।
कौन कहे नरकी सुरकी पशु पक्षिन की बुधि हीन विचारी ।
योगी यती हूं डरे जेहिते अस प्यारी की दृष्टि है काम कटारी१।
जो तिहुँ लोकन लोगन को वश माहिं करे अपने बल भारी ।
सो प्रबला अबला कवि भाषत जाने गई उनकी मति मारी ।
नेक सुशील विचार करी नहिं नाम धरी उहि प्राण पियारी ।

प्राण अरी कहतोतो भलो जेहि प्यारी की दृष्टि है काम कटारी२।
अंग मनोहर शीतलता अहै तीनहुँ ताप मिटावन हारी ।
त्यों कर कंज मयंक लों आनन है सब भांति महा सुखकारी ।
भावतहावहु भाव भले पर एक सुशील है आपति भारी ।
चीर करे जेहि पीर बढावत प्यारी की दृष्टि है काम कटारी।३।
जारी न बातें बनावे यहां जबते हों लखी चढी ताप तिजारी ।
होस हवास ठिकाने नहीं नहिं जानत जा केहि ठाम सिधारी ।
चीर करेजेहि रेजे करी अरु डारी सुशील महा दुख भारी ।
खून भरी रंग रात लखावत प्यारी की दृष्टि है काम कटारी ४।
भोक गड़ी जबते उरमें तबते वह क्योंहूं टरे नहिं टारी ।
शालति है तन हालत ना परे सेज कराहों मैं रात दिनारी ।
होय उपाय कछू तो करो नतु चाहत प्राण सुशील सिधारी ।
भूलहूंदेखत ना यदि जानत प्यारी की दृष्टि है काम कटारी ।५।
नैन लगै अरु पीर करे सिगरे तनको करे खून खुआरी ।
पास न बैठन देतहै काहुहिं चाल सबै यहिकी अनियारी ।
नाहिन भात सुशीलनसे नहिं लागन देत इको उपचारी ।
आपहि मार जिवावत है अस प्यारीकी दृष्टिहै काम कटारी ६।
फूलको बान शरासन तानत भारत बालक कोननिहारी ।
फौजहु राखतहै अबलान की जोधनकीनि जिन्हे बल भारी ।
जो कहुँ जोरत अर्जुन रावन राम समान तो होत कहारी ।
यों डरते कँपते कहते जब प्यारी की दृष्टि है काम कटारी ७ ।
पास रहे तो हुलास भरे कहे जीवन मूरि है प्राण पियारी ।

राखत मोपे विशेष कृपा तिरछी दृग ताकि करैहै सुखारी।
सोई जहां दिन दूरी भई अकुलात सुशील के बाप मतारी।
रोवत कातर आरत भाषत प्यारीकी दृष्टिहै काम कटारी। ८।

समस्या २५ वीं। अबला अबलों अवलोकतिहै।

गवने ताजि धाम विदेश पिया त्रिय व्याकुल है अति शोकतिहै।
जब प्रीतम दृष्टिकी ओट भये तब नैनन ते जल रोकतिहै।
सुखभोग संयोगके छूटतही विरहानल में तनुझोकतिहै।
पति प्रेम फते चढि ऊंचे अटा अबला अबलों अवलोकति है। १
छबि खान बखान तो जात नहीं थकि जातकहे कविकी मति है।
समता किम दीजिय औरन की जेहि देख लजाति हिये रतिहै।
रति चिह्न निहार प्रभात सोई रिस ते पति सों नहिं बोलति है।
कर दीठ दमोदर पै तिरछी अबला अबलों अवलोकतिहै। २।

समस्या २६ वीं। अब जाजिन ऐसी मिजांनजनिहैतू।

आयो नहीं तनु योवनरी सखि मानिन मोतेरताजिन हैतू।
जाहु अजो प्रिय सेज अरी सुखभोगन में मन राजिन हैतू।
प्राण पियारे न भूलकरी कछु काहे इतो इतराजिन हैतू।
पांय परेहू न मानतरी अब जाजिन ऐसी मिजाजनि हैतू १

समस्या २७ वीं। कहु काके वियोग विभूतिरमायो।

कै तेरे कन्त विदेश रमें तिन्हें खोजन को यह भेष बनायो।
कै तेरो चित्त लगो हरिसों जिन उद्धवके कर योग पठायो।
भाषत गंगापरशादयही कि केहू हित मंत्र औ यंत्र जगायो।

ये मृगलोचनी चन्द्रमुखी कहु काके वियोग विभूति रमायो ।१।
भ्रात छुटे पितु मात छुटे कुल नात छुटे सबही विसरायो।
धाम छुटे सब काम छुटे निज ग्राम छुटे निरमोह कहायो।
लोग छुटे सुखभोग छुटे उद्योग छुटे त्रियहू विलगायो।
आलसमें कछु ह्वै न सक्यो तब द्रव्य वियोग विभूति रमायो।२।
कोमल गौर शरीर मनोहर मंजुल प्रेम तरंग बढायो।
नैनकी सैनने प्राण हरचो सुखमा मुखचंद्र की चित्त लुभायो।
भूषण चीर सुरंगति पै छबि देखं फते नहिं और सुहायो।
मोहनी मूरति देखबेको हम तेरे वियोग विभूति रमायो।३।
क्याकहिये केहिसों सजनी मन माने नहीं कितनो समझायो।
जाय फँस्यो वह प्रीतिके फन्दन ताते उबार नहीं बन आयो।
फेरि विचारि कियो मन मांहकि प्यारीकी प्रीति बडो दुखपायो।
ताते भजों रघुनन्दनको सोतो याहि वियोग विभूतिरमायो।४।
अंजन खंजन नैन नहीं अधरान पै पान नहीं कस खायो।
फूल न बीच सुबेनी खुली अँगराग सुअंगन नाहिं लगायो।
कंचुकी फाटि धरी कुचमें मरगजी चूनर देह पधायो।
ये संग वासिनी पूंछतमें कहु काके वियोग विभूति रमायो ५।
एक समय हरिने ब्रजबाल बुलावनको मुनि भेष बनायो।
कूल कलिन्दीके कुंजन में मृग आसन डारि सुनाद बजायो।
सो सुन धाई विलोकन गंग पिछान पिया चित्त तर्क नहायो।
वैस किशोर अबै तुम्हरी कहु काके वियोग विभूति रमायो ६।

नाम जलन्धरको सुनिकै तिय सत्य सतीपनसों दरशायो।
त्यागि विभव भवके सबही जरिछार भई सुपरम्पद पायो।
सो प्रभु कौतुकसों लखि आप दया वश ह्वै मनमें पछतायो।
गंगकहैं यहिते हरिने तन वृन्द वियोग विभूति रमायो। ७।
त्यागि सबै घरकी धन संपति कानन २ घूमन आयो।
क्यों तजि भोजन छैरस नीरस शाक चबावन कष्ट उठायो।
जोतनु सुंदर वस्त्र विभूषण जोगतिहै इहि भांति बनायो।
सोग मच्यो मुँह सोह रह्यो कहु काके वियोगविभूति रमायो ८।
भारत नाम प्रसिद्ध सबै जग कौन नहीं मुहिं पूजन आयो।
कौन नहीं नमिके हमसों धन त्यों गुन आपन नाम बढ़ायो।
हायहमारेहि ऐसे कपूत जने अब जो इमि मोह नशायो।
पूंछत का दुखी भारत ते कहु काके वियोग विभूति रमायो ९।
छांडि सरस्वतित्यों लक्ष्मीहू भजो जिनको जियते अपनायो।
औ बल उद्यम साहसहू तजिके उन दोउन साथ सिधायो।
जीव लगै अब नेक नहीं विधि वेमुखभै सब मोर नशायो।
उत्तर देऊं कहा इहिको कहु काके वियोग विभूति रमायो१०।
राम युधिष्ठिर विक्रम भोज समान अनेकन पूत चबायो।
मारि सरस्वति औ लक्ष्मीकहँ सात समुद्रके पार भगायो।
उद्यम साहस धीर पराक्रम काल कराल सबै विनशायो।
पूंछतका दुखी भारतते कहु काके वियोग विभूति रमायो।११।
राम सियायुत बंधु मनोहर जाय रहे वन बाप पठायो।

तिन संग सती छल कीन्ह अनामय यद्यपि नाथ बहुत समुझायो
सो अपराधसे त्याग कियो तिन जाय पिताघर प्राणगँवायो
महाबीर सदा श्रुतिपंथ रहे शुचि नारि वियोग विभूति रमायो १२

समस्या २८ वीं। पपिहा जब पूंछिहै पीव कहां।

पिय मोरे विदेश को नाम न लो सुनके उरहोत है शोक महां
दिन चार न आये भये अबहीं सुसरयो कछ काज न मोरे यहां
इत पावस आय गयो शिरपै तुम मानत ना तजिजात वहाँ
धारिहौं किम धीर सुजान पिया पपिहा जब पूछिहै पीव कहां१
उठि है नभमें घनघोर घटा बक पांति फिरेगी यहां ते वहां
मुरवा चहुँधा नचिहैं बनमें रचिहैं सखियां सुहिंडोल तहां
करिहैं मनमोद ते कोलि सबै लखिके हिय होयगो शोक महा
तुम जाते सुजान बुझाइहै को पपिहा जब पूछिहैं पीव कहां २
तजिकै कुलकान बडों जन की तुमसों करी प्रीति मैं आय यहां
समुझी घरहाइन की नहिं बात सिखाय रही बहुतेक तहां
सोइ पावसहीमें सुजान पिया परदेशमें जान कहो दईहाँ
यह प्रीति तबै समझी परिहै पपिहा जब पूछिहै पीव कहाँ। ३
मनभावन जाय विदेश बसे कछुके न सन्देश पठायोयहाँ
निशि बासर शोच रहै यहिको अरी काह भयो दई हाल वहाँ
जिय चाहत है विधि पंख जो दे तोय जाय मिलों पिय प्योरजहां
बिन प्यारे सुजान कहा करिहौं पपिहा जब पूंछिहै पीव कहां४
पियप्यारे विदेश को जात तजे सहि जायगो दुःख अतीवकहा।

उनई नई बार घटा नभमें लखि धीर धरायंगी तीव कहां।
बन कूकति कैलि कलोलनिते सुनि जीवन धारिहै जीवकहां।
सबते दुख होय सुजान बड़ो पपिहा जब पूंछिहै पीव कहां।५।
प्रीतम मेरे विदेश नजाहु नहीं मेरो चित्त लगेगो यहां।
पावस में उठे कारीघटा अरु मण्डुक शोर करैंगे महां।
गंगापरशाद अंधेरी निशा में अकेली पड़ी मैं रहोंगी तहां।
कैसे परी कल प्यारे हमें पपिहा जब पूछि है पीव कहां। ६।

समस्या २९ वीं—केहि कारण कूप में डोलत पानी।

पूंछत में नाहिं लाज लगी जलमें कवि कौनहै आप कि सानी।
काज सरै जिन बातन सों तिन बातनके हित बोलिय बानी।
लाभ कहा जो बताय दियो हमते कछु कारण सत्य प्रमानी।
शंकर शोच तुम्हें ये वृथा केहि कारण कूप में डोलत पानी।१।
बूझिय नीति सुधर्म कथानको बूझिय देहको कौनहै प्रानी।
बूझिय ज्ञान विवेक विचारहि बूझिय कर्म अकर्म की बानी।
बूझहू शब्दरु ब्रह्म सो जीवहिं बूझहु क्या जग प्रेम कहानी।
शंकर बूझत लाभ कहा केहि कारण कूप में डोलत पानी। २।
एक सुनारि शृंगार किये जल लेन गई अति रूपकी खानी।
नेत्र पराजित मीन तहां भय लीन मनो तनुहै बिन प्रानी।
कंज नहीं अब ज्योति निहारिके होय सकै अँखियानकी सानी।
लोटन सों शिर फोर दुखी यहि कारण कूपमें डोलत पानी।३।
गुणकी अगरी डगरी २ बगरी गगरी भरिये सुखदानी।
चपलासी चली चटकीली भली देख्योचहै वारिमें रूप सयानी।

चख चंचल २ मींन लखे कवि रामनरायण सो थहरानी।
कूप परी सफ़री फ़रकी तेहि कारण कूपमें डोलत पानी।४।
एक समय जल आननको घरसे निकसी अबला ब्रजरानी।
जात सँकोच में डोलभरन जल खैंचत थी अँगिया मसकानी।
देखत हीं छतियां उघरीं कवि सन्त कहैं मनसा ललचानी।
हाथ बिना पछतात रह्यो तेहि कारण कूप में डोलत पानी ५।

समस्या ३० वीं। रति रस रंगनमें कौन अंग डोलेना॥

कौन कवि कोविद प्रवीण है यकीन वाला कौन शूरवीर जौन काम रस बोलेना। कौन योगी कौन भोगी कौनहै वियोगी रोगी नारि पर्यंकपै निशंकह्वैके बोलेनो।कौन है पतिव्रता पतिव्रता न जानैं जौन करिके कुसंग कौन कुपथ टटोलेना। कौन वीर काजरकी कोठरीते बचि आयो रति रस रंगन में कौन अंग डोलेना॥ १॥

चांदनीसे उज्ज्वल सुश्वेत अहिफेनहूसे मन्द२ मारुत अनंगहूते भूलेना। छिटिक रह्यो तारागण यामिनी अंधेरी माहिं ताहू पै कुहू २ काकपालि बोलेना। भनत कुवेर केशरीकिशोरी कुमार दोऊ वृन्दावन कूलन बिहार रस कौलेना। खेले रस रंग ज्यों अनंग रति उन्नति है रति रस रंगनमें कौन अंग डोलेना॥ २॥

याम भर यामिनी गमाय जमलेशगये काम२कामनीकी करिके किलौलेना। आगमन जानि प्राण प्रीतम को प्राण प्यारी परी पर्यंक पै पलकऊ खोलेना। निद्राक्षयको उपचार कीतो कीतो भांति कीन्हो प्यारीकीतो भांतिन डुलायो मुख बोलेना। करी

जंघा जघन में मैनके उमंगन में रति रंस रंगन मे कौन अंग डोलेना ॥ ३ ॥

तन सुकुमारी द्युति दामिन दमकवारी मैन मदहारी प्यारी संग में किलोलेना। सुन्दर अटारी में निवारी की सँवारी सेज तापे परी उरज उतंग बंद खोलेना। बालमविहारी भुज डारी गले बार बार चूमत कपोल दोऊ लोल मुख बोलेना। मुगधा विचारी सकुचातकर चुपात बहु रति रस रंगन में कौन अंग डोलेना ॥ ४ ॥

बैठी बनवीथिन विशेष बहु बागनकी बिसर विहार वल जात लखि लोलेना। बीती अँधियारी निशि आधीतऊ आधि नाहिं अति अकुलाय पट खोले पुनि खोलेना। पिछले पहर पिय आय गहि सेजन पै फेरि मुख माननि मनोज मुख बोलेना। हिय हरषात बरषात रस रंगनमें रति रस रंगनमें कौन अंग डोलेना ॥ ५ ॥

कारिके शृँगार मांग मोतिनकी संवारी अति रसकी रसीली सेज पौढ़ि कछू बोलेना। नायक नवीन कोक कलाहू प्रवीन तहां आय मुसकायो कही नीवी क्यों तु खोलेना। सुनत सुधारो बैन बोली प्राणप्यारी तबै दीजिये जवाब आज कोई मोतेबोलेना। रति रंस रंगन में कौन अंग डोले नहिं डोलें सब अंग एक नैन कहूं डोलेना ॥ ६ ॥

प्यारी पर्यंकपै पौढ़ी पिय संग सखी मैन मदमाती तऊ नीवी बंद खोलेना। कुच मसकेते लंक लचकत जंघ युग थर २ होत तन प्यारे को सतोलेना। चुम्बन करत हरषाताहियं गंग कवि

सीसीसुर रागे दूजो वचन सु बोलेना । आनंद निलास छकी एक-टक जोवे मुख रति रस रंगन में नैन सैन डोलेना ॥ ७ ॥

चिबुक अधर कर रसना ललाट उर जंक औ नितम्बनकी हलनि सु भूलेना । भ्रुकुटी कपोल मोरवान कटि बदर की शीश दृष्टि नासिकाकी फरकनि बोलेना । भाषत गंगाप्रशाद भूपति मनोज बर ऐसो कोऊ अंग नाहिं जेहि में कलोलेना । सकल सुदेह विच मैन नृप थर थरात रति रस रंगन में कौन अंग डोलेना । ८ ।

आई है सकारे आज बीर तेरी नई बीर पूंछे क्यों न पीर यो अधीर मुख बोलेना । टारि पट घूंघुट निहार नैन नीचे कर बोली सकुचाय चढ़ी तापतन टौलेना । होसना ठिकाने मेरो अंग अंग डोलत है डोलत न जायं मोसों आज कछु बोलेना। बोली नई बीर हँसि हरे हरे राम राम रति रस रंगनमें कौन अंग डोलेना ॥ ९ ॥

केश विखराय नैन सैननही बात करे भौंह नचैं नासिका को सिकुर कलोलेना । नाहीं जी नहींजी किये रसना अधररद कंठ सुकपोल रहि जात हैं अडोलेना । बाहु पीठ उरज जंघ और अंग अंग जेते करत प्रसंगको उमंग है उछोलेना । मनहूं मन मांह करे मनन गुनावन तव राति रस रंगनमें कौन अंग डोलेना ॥ १० ॥

बाल है अधीर लाल बाढ़ी तन पीर साल देखो चलि हाल आजु नेक नैन खोलैना । सखियां सहेली जाय बार २ पूंछति

हैं परीहै अचेत पर्यंक सटी बोलैना । कहत सुशील धारे कौन परवाह याको दीजियो बुझाय फेर झूलियो हिंडोलैना। जानती तुहूंहो भले झूलत हिंडोले और रति रस रंगनमें कौन अंग डोलैना ॥ ११ ॥

सुरत छबीले संग करत दबाये रही भूषण सखीरी जासों सोरकर बोलेना। हाहा करि हारी मेरे हरुवे हलाओ अंग झटक झटाक ऐंच खैंचिये निचोलेना । काम मतवारो प्यारो चित्तदै न चेत करै गुरुजन लाज गरुवाई मन तौलेना । ता नो कहा देत मोहिं जानो जू सुजान जिय, रति रसरंगनमें कौन अंग डोलेना ॥ १२ ॥

समस्या ३१ वीं। यारीमें पियारी अति पीअरी परति जात।

जबसे लगी है प्रीति श्याम रावरेसों सखी, कीरति किशोरी लोक लाज न मरति जात। चैन न परत दिन रैन मुख देखे विन नैनन न नींद तनु ज्वाला सों जरति जात। खान पान वसन न भावै गृह काज कछु विनहू सताये सबकाहूं सो लरति जात .। नन्दकेकुमार मनमोहन विहारी जीकी यारी में प्यारी अति पीअरी परति जात ॥ १ ॥

बदन मलीन छवि छीन हीन मारे मन नैनन सदाही जलढ़ारसी ढराति जात । व्याकुल फिरत नहिं काहूसे कहत भेद, ठिठुक २ पग धरनि धराति जात। मौन ह्वै रहत कुछ सोच में न जानी जात बोलत बुलाये सांस शीतल भराति जात।

काहेकों मचाई बिलगाई रे कन्हाई तेरी, यारीमें प्यारी अति पीअरी परति जात ॥ २ ॥

वालम विदेश विरमाये काहू वैरिनने कामिन विलाप आप आपही करति ज्ञात। लोग परिवार घर बारहूं अंगार लागे विरह तपन तन तापसी बरति जात। खड़े न पड़ेही कछु बैठे न उठेही चैन रैन दिन याही विध सोचन मरति जात। सर्व सुख कारी हितकारी निज स्वामीकी यारीमें पियारी अति पीवरी परति जात ॥ ३ ॥

खात पान राग रंग द्वेष मद मोह छोड़ काम क्रोध लोभ जीत बासना हरति जात। सत्य शील ज्ञान भक्ति धीर नीति दान धर्म विनय विवेक श्रम साहस करति जात।दीन हितकारी उपकारक सदैवचित, इन्द्रिनकी रुचि सत मारग धरति जात। सन्तनकी देह निराकार परब्रह्महीकी यारीमें पियारी अति पीवरी परति जात ॥ ४ ॥

बामा बिन बालम विहाय वंश वृन्द वेष व्याकुल वदन विरहानल बरति जाति।कठिन कराल काल काटति कहांलों कहों कोमल किसोरी कुल कानहू करति जाति।जाहिर जगतयश यौवन जवानी जोर जान जगदीश-योग ज्वालमें जरति जाति। सुन्दर सलोने सुखसिंधु श्याम साँवरेकी यारीमें पियारी अति पीवरी परति जाति। ५।

समस्या ३२ वीं। प्रीति करो तो प्रतीति न छोड़िये।

पाहनकी प्रतिमा गढिके तेहि शीश नवाय दोहूं कर जोडिये।

चन्दन अक्षत पुष्प चढ़ाइकै ऊपर ते जल कुम्भहु फोडिये। ध्यान सदा जड कल्पित ईशपै और केहू दिशि चित्त न मोडिये। ताहूपै काज सरै तबहीं यदि प्रीति करो तो प्रतीति न छोडिये।१। व्याकुलता सियकी लखिकै कह कौशिक राम सों चापही तोडिये। रानिनके दुख शोच महीपको मानिनके मद मस्तक फोडिये। भृगुवरके भ्रमको हरिके मिथिलेशसे आज समागम जोडिये। व्याहो अवश्य विदेहसुता यदि प्रीति करो तो प्रतीति न छोडिये॥ २॥ लीजे न प्रीतिको नाम कभौं यदि कीजे तो अंत लौं फेर न तोडिये। आपने दुःखको आप हरो अरु मित्र व्यथा अपने शिर ओडिये । चाहो सदा हित शुद्ध हिये प्रगटौ गुण अवगुण ते मुख मोडिये। राखो न दम्भ दुराश फते यदि प्रीति करो तो प्रतीति न छोडिये ॥ ३॥ कृष्ण विछोहमें व्याकुल ह्वै सखियां कहैं श्याम सों नेह न जोडिये। आपतो जाय रमें कुबरी गृह भेजे हमें लिख योगही ओडिये। कोई कहे वह व्यापक सर्वके आइहै वेग सनेह न तोडिये । जोगुरु भक्ति बढाय रहो यदि प्रीति करो तो प्रतीति न छोडियै ॥ ४ ॥ व्यापक ब्रह्ममें लीन रहो अरु सत्यकी वृतिसे चित्त न मोडिये। नम्रता शील दया श्रम साहस न्याय क्षमा धृत आदिक ओडिये। कीजै दुखी नहिं जीव कोई मनमें खल पंच विषय नाहिं जोडिये। पूरण लाभ मिले हरि सों यदि प्रीति करो तो प्रतीति न छोडिये ।५।

समस्या ३३ वीं। मुरि मुसक्यानकी ललाके सौंहखानकी। दक्खिनकी बाल डील डौलमें विशाल होत सुन्दर स्वरूपवान

उरज उठानकी। कलितकपोलकटि केहरि गयन्द गति नैनकी निकाई अति चित्त हुलसानकी। दशन हँसन श्रुति नासिका रसीले वैन सैनशूल हूलहिय प्राण नुकसानकी। बानके समान तन तानके वसी है छवि मुरि मुसक्यानकी ललाके सौंह खानकी ॥ १ ॥

ब्रजकी नवेली अलबेलिन सहेलि संग करत रसीले गान कंठ सुरतानकी। कान्हके सनेहमें विहालबाल प्रात हीते कुंजनमें फिरत किशोरी वृषभानकी। बाँसुरीकी ध्वनि गति नूपुर दोउन छवि माधुरी हँसन अरुणाई मुखपानकी। प्रेममें परी है बानि सखिनकी बारबार मुरि मुसक्यानकी ललाके सौंह खानकी। २।

पश्चिमकी नारी सुकुमारी गुणवारी अति रंग रूपवान सुठि गरव गुमानकी। दाडिम दशन मृगसावक सरिस नैन कलित कपोत कंठ गांन पिकतानकी। अधर कपोल श्रुतिनासिका नितंब करि केश कुच कर सब अंग अनुमानकी। मोहनी मतंगगति साजती सुरंगपट मुरि मुसक्यानकी ललाके सौंह खानकी ॥ ३ ॥

कंचुकी कसन कच श्यामकी डसन छवि माधुरी हसन अरुणाई मुख पानकी। रंगकीचटक डोड नैनकी मटक, मृदु बैनकी खटक मनभाई गति तानकी। रैनकी रमन तन मैनकी दमन तिहुँ तापकी समन करि केहरि समानकी। बार २ वचनमें बालकी परी है बानि मुरि मुसक्यानकी ललाकी सौंह खानकी। ४।

पूछो कछु राजनीति धर्म कर्म मर्म कछु पूछो जीव ब्रह्म भेद पूछो बात ज्ञानकी। पूछो दढ द्रव्य वायु पञ्च तत्त्व इन्द्रीदश पू-

छो तम सत्व रज त्रिगुण महानकी। पूछो कौन ईश कौन भोगत शरीर दुःख मैंहूं कौन कैसी जग माया अभिमानकी।कहत फतेह याके पूछिवेमें लाभकौन मुरिमुसक्यानकी ललाकेसौंह खानकी।

समस्या ३४ वीं। मृदु मुसिक्यानमें चुराय चित्त लैगई—रामजी कहत देखो लखन सियाकी छवि वाटिकाके बीचमें लताके ओट ह्वैगई। सखिनके साथ चली जात गौरि पूजनेको दरश दिखायके दुसह दुंःख दैगई। नवलकिशोरी मनमोहनी अनूप रूप कंजन कटाक्ष नैन सैन सों चितै गई। जनकदुलारी ऐसो सहज पुनीत मेरो मृदु मुसक्यानमें चुराय चित्त लैगई ॥ १ ॥

चौंकके अटापै एक कंचनी नवल वैस केश छिटकारे ठाढी मनमें मझैगई, पीअरे वसन बर भूषन विलोकि गर मोतिनकी माल व्याल फंद में फँसै गई, चन्द्र मुखवारी मनहारी मतवारी चाल भाल भौंह भूषित दिखाय। दुख दैगई तान कलगान मुखपानकी अरुण छवि मृदु मुसक्याय कै चुराय चित्त लैगई ॥ २ ॥

ओढ़े पीत सारी जामैं बैंजनी किनारी सोहै बारी वैस-वारी प्यारी प्रेम सों पगैगई। भनत फतेह भरि भूषणके भारन सों मंद मंद मारग गयंद गति ह्वैगई। कोमल कलित कटि केहरि कलाप केकि केश कर करक करेजे कुन्त कैगई। माधुरी हँसन द्युति दामिन दशन छवि मृदु मुसक्यान में चुराय चित्त लैगई ॥ ३ ॥

मनहै मलीन काम क्रोधही में लीन रहै अबुध विवेक हीन लाज सब ध्वै गई। विविध विकारन में बेधित बिताई वैस बहकि बढ़ाय बैर बेलि विष वैगई, ईशहि विसार भव वन्धन में भूलि रह्यो पाइकै कुसंग सब सुमति नशै गई । कहत फतेह ऐसो फंद में फँस्यो है ताते मुदु मुसक्यायके चुराय चित्त लैगई ॥ ४ ॥

लैगई लुभाय लखि लोगनकी लोक लाज दामिन दमक देह दूनो दुख दैगई दैगई दिखाय दृग दारुण दुसह दम्भ हेरत हँसीली हूल हूल हिय ह्वैगई ह्वैगई । हमारे हित हेमकी हरनहार चंचल चपल चख चलन चुभैगई । भैगई फतेह भाभरे भारि भीरनमें मृदु मुसक्यान में चुराय चित्त लेगई ॥ ५ ॥

समस्या ३८ वीं—दृगकी निकाई लखि मृगहू लजात हैं ॥

कारे रतनारे श्वेत त्रिविध रसीले नैन, पूरित गरल मद सुधा से दिखात हैं। हेरन हरन प्रान देखके मरत केते केते महि गिरत परत झुकि जात हैं। केते देख जियत पियत प्रेम रस देखि मुख नभ मंडलके रवि शशि मातहैं। कंजनके गंजन सुखंजनकी कौन कहै दृगकी निकाई देख मृगहू लजातहैं ॥ १ ॥

केदली कुठारी कंठ जानु सुघराई देखि केहरि कराह कटि देखि दुरजातहैं। गात अवलोकके लजाय जात जातरूप देखिके गयंद निजगतहू भुलातहैं।बदन विलोकि विधु वारिदकी ओट होत आलिन के वृन्द केश देख सकुचातहैं दशन को

देख देख दाडिम दरकि जात दृगकी निकाई लखि मृगहूं लजात हैं ॥ २ ॥

शक्ति की मयन्द गति हूलसी हसन होत; भौंहन कमान तान मान कर अघातहैं। कुंतसे कराल कुच शुकसे कपोलकंठ सारे दुखदायक भरेही यह गातहैं। बानसे विलोक नैन खगसे कटाक्ष नैन व्याकुल दिवस रैन चैनना दिखातहैं। ताहू पै फतेह से कहाओ तुम बार २ दृगकी निकाई लखि मृगहू लजातहैं ॥ ३ ॥

वारी बैस बदन विभूषन विराजै वेश बसन विलोकि विज्जु वारिद बिलातहैं। भोग भरी भामिनको भावत भलोही भेष भ्रमिके भैषज्य निज भेषज भुलातहैं। मंजुल महक मृग मदकी मयंक मुख माल मुकताइलपै मोहे मन जातहैं। अंजन बिनाही मन रंजन पियाके दोऊ दृगकी निकाई देख मृगहू लजातहैं ॥ ४ ॥

चरन२ चलि चिह्नहू बनावे महि बरन२वर भूषन सुहातहै। नरन २ मन मोहत निरख नैन सरन २ में सरोज सकुचातहै। घरन२घहरात ध्वनि नूपुरकी दरन २दरशन दरशातहै। करन२ फहरातसी फिरत जाके दृगकी निकाई लखि मृगहू लजातहैं५॥

समस्या ३६ वीं ज्ञानी के आगे बयान गुनीको ॥

राम कथा हरि भक्तहि सोहत योगहि जाय हनाय धुनीको। काव्य कला कवि को उर सोहत ज्योतिष चित्त रमै सगुनीको सोहत वेदहि रोग विचार निवास तपोवन श्रेष्ठ मुनीको। त्योंहीं फते करि बो अति सोहत ज्ञानीके आगे बयान गुनीको ॥ १ ॥

शूरके आगे कथा रणकी नर कूरके आगे प्रपंच दुनीको। सन्तहि ज्ञान विवेक सुहात असन्तहि रूप छटा तरुनीको । सज्जनको उपकारकी बात निलज्जनको यश आपननीको।त्योहीं फते करिबो अति सोहत ज्ञानीके आगे बयान गुनीको ॥ २ ॥

समस्या ३७ वीं। कौन उपाय हिये नहिं भावै ।

दम्भअनेक दिखाय छली नित झूठ विवादमें द्रव्यकमावै।कोटिन पापकरें निशि वासर उत्तम जन्मको ब्यर्थ गमावै । कर्म अकर्म करै ठगिके शुभ कर्मकी ओर न चित्त चलावै। अन्त में जौन चले संग जीवके तौन उपाय हिये नहिं भावै ॥ १ ॥

आनन्दकंद दयानिधि पालक दुःख-निकन्द कलेश-नशावै। आपनी भक्ति दृढ़ायहिये मम औरके मोहसे त्याग करावै। पंच विषै बसि भूलि फते निज ईश विसार कहा सुख पावै । अंतमें जौन चले संग जीवके तौन उपाय हिये नहिं भावै ।

समस्या ३८ वीं। अंकुर उरोजनके रोजन बढै लगे।

तजन लगीहै खेल मेल वैस वारिनकी नारिनकी चाल-शुद्धबैन अब कढै लगे,प्रीतमकी प्रतिमा उर अन्तर बसाई अरु गालपै गुलाबीरंग कछुकचढै लगे रसकी कहानिनको पूंछत सखीरिन सों कोमल उर अंतर कामबाणहू अढै लगे।कहत हर्षराम ये मयंक की कलाकी भांति अंकुर उरोजनके रोजन बढै लगे ॥ १ ॥

समस्या ३९ वीं। वंशी जबै बन श्याम बजाई ।

व्योम थक्यो रविको रथ बाजिसों धूम ध्वजा प्रगट्यो शितलाई। अम्बर माहि सुरासुर मोहित ह्वैकरपाहनसों रह्यो छाई ।

कुंजन में खग स्वस्थ सुजान भो सिंधु समीर लही शितलाई ।
शंकर हूकी समाधि गई छुटि वंशी जबै बन श्याम बजाई॥ १॥
शारद मास विलास विलोकि उयो विधु पूरण मांह जुन्हाई ।
मन्द सुगंध समीर बहै रविजा रह्यो पंकजते छवि छाई ।
जाय कलिन्दीके कूल कलोलते टेक कदम्बके डार सुहाई ।
भई ब्रजनार विहाल सुजान जू बंशी जबै बन श्याम बजाई॥ २॥
केहरि सों कटि माह दुकूल कसे बर पीत महा छवि छाई ।
कुंडल गोल अमोल कपोल पै डोलत चित्त सो लेत चुराई ।
यामिन मांह जुहार अकेल सो कुंज करीलनके रह्यो जाई ।
सो न डरी तिय जाय मिली जहँ बंशी जबै बन श्याम बजाई३॥
शब्द अचानक कान परयो हरि देखनको मनमें अकुलाई ।
कांनि गुरूजन की न गिनी अपने २ गृहते उठधाई ।
वेधत कंटक पांयन मों दुख झेलत मारगमें बहुताई ।
जाय मिलीं तिय प्यारे सुजानसों वंशी जबै बन श्याम बजाई४॥
कोऊ कहै कितते यह शब्द भो कोऊ कहै किये शब्द कन्हाई ।
कोऊ करै सुधि चीर की ना उर कोउ धरै नहिं धीर दुहाई ॥
काहूके लाज न काज रह्यो गृहकाहू बकै निकसै अकुलाई ।
होय गईं वनिता उन्मत्त सों वंशी जबै बन श्याम बजाई ॥५॥
बात न मानतहै पतिकी कोउ लाज बड़नकी शंक न आई ।
गोकुलके कुलको न गिनी एक बारहिते गृहकाज भुलाई ॥
श्याम सनेह सबै अटकी नटकी सुधि धारि हिये हरषाई ।
धाय सुजानसों रासरची सब वंशी जबै बन श्याम बजाई ॥ ६॥

समस्या ४० वीं—शिर ओढ़नि बैंजनि पैंजनि पायन।
तुंग तने कुच भूधर से युग केहरि सी कटि खीन लखायन।
पीन नितम्ब सरोरुहु पाणि मयंक सों आननहै छबि छायन।
हाटककी पुतली मनु नारि लखे उपमा कविके मुख आयन॥
जातचली सोई आज सजे शिर ओढ़नि बैंजनि पैंजनि पायन॥१॥
कौन बिथूर दई कच कुंचित को हियहार कियो उरझायन।
पील कपोलन पै किन पारि दई किन रूप बिगारि सुहायन।
कौन छुड़ाय दई कुच कुंकुम को नखघात दियो कर गायन।
सांचीसुजान सों कौन दई शिर ओढ़नि बैंजनि पैंजनि पायन॥२॥
अंग सुधार सुगंधनिसों कच मोतिन गूंथ लई छबि दायन।
तुंग उरोजन पै कसि कंचुकि धारि लई मुख पान सुभायन॥
मोहनके मनमोहन हेतु बनाय सबै विध रूप लुभायन।
जात सुजानपै साजि अली शिर ओढ़नि बैंजनि पैंजनि पायन॥३॥
पावसके अँधियारमहा निशि पौन झकोरतहैं चहुँ घायन।
कीच मचो मगहै तेहिपै अपनो निशिमें जहँ गात लखायन॥
या अभिसारमें काज शृंगारके कौन लखात अहै ठकुरायन।
सादे चले न सजे यहिते शिर ओढ़नि बैंजनि पैंजनि पायन॥४
क्यों इतनो बतराति गँवारन मानतिहै गुरु लोग सिखायन।
राति दिना झगरा पियसों करि मान रहे मुखके अनखायन।
तू समझे सिख मोर नहीं कह अन्त सुजान किसौं पछितायन।
मारिकै छोरिनले तुम्हरो शिर ओढ़नि बैंजनि पैंजनि पायन ५॥
छैल बने सब गैल में घूमत राय कहावतहो चहुँ घायन।

प्रेमकी बात करैं नित आय टका कहुं गांठ खुले न सुभायन ॥
आजु सुजानकी सौंह परचौ कर बात कही झुठजो बहुतायन ।
मूंछि उखारि लिहों नतुला शिरओढ़नि बैंजनि पैंजनि पायन॥ ६ ॥

समस्या ४१ वीं ॥ मत माननि मानु मनावन ते ।
तोहिंसों हितकी इक बात कहों कहियो न निजै मन भावनते ॥
तव नाह सुजान जू गोपिन ते अहे प्रीति किये तिय गावन ते ।
अव युक्ति वतावत नीक भई मुख फेरिकै बैठियो आवनते ॥
जवलों करि सौंह न ताहि तजै मति माननि मानु मनावन ते॥ १॥

तवलों न कियो कछु कान अरी वहु भांति भटू समझावनते।
अव बूझि परी रघुवीर भलै जव सौतिनि ताव वितावनते ॥
यह मान मेरो सिख गांठि करो अब आपहि आवन वावनते ।
जवलों पदपै न गिरै तवलों मति माननि मानु मनावनते ॥ २ ॥

तुम्हरे हितकी इक कैकयी जू हम बात सुनी तिय गावनते।
कल रामहि राज्य समर्पहिंगे दशरत्थ सुजान जू चावनते ॥
तुम मान कै बैठ भरत्थ लिये बन राम कहो मनभावनते ।
जवलों न स्वीकार करैं तवलों मति माननि मानि मनावनते॥ ३॥

समस्या ४२वीं—पिय जाय विदेशमें छाय रहे ।
जिनके हित लोककी लाज तजी घर बाहरके दुरवैन सहे ॥
सुनते नहिं वैन सुधारसके उर जातहै आग वियोग दहे ।
नित प्रेम विलास में पायो महासुख सो अव जात न वैन कहे ।
मन व्याकुलहै अति कैसो जियों हरि जाय विदेशमें छाय रहे१ ॥

अबतो नहिं खान औ पान सुहाय न गेहके काम को चित्त चहे॥
मुखकी छबि को नहिं ध्यान टेर उरकी बिरहाग्नि अतीव दहे ।
कवि लक्ष्मणका तकसीर करी कबहूं नहिं बैन कुबैन सहे ॥
हमतो हैं अभागिन जो तजके पिय जाय विदेशमें छायरहे ॥ २॥

आयो बसन्त सुहावन लागत मोरवा चहुँओरसे बोल रहेहैं ।
डोले समीर कलोलत्ति कामिन कुंज लतासों लता लपटे हैं ॥
योगी यती औ सती तपसी सबहीं बिरहानल आय लरेहैं ।
मोसों रहो नहिं जाय सखी हरि जाय विदेश में छाय रहेहैं ॥ ३॥

समस्या ४३ वीं । फाटि गयो पै दरार न आई ।

छैल छबीले कह्यो चलिबो परदेश उये दिन नाथ ललाई ॥
सो सुनि बैन न चैन रह्यो सब रोवत २ रैन गवाई ।
बहुत विचार गहे उपचार रहे न सम्हार गिरी मुरझाई ॥
प्रात भये पह फाटतहीं हिय फाटि गयो पै दरार न आई ॥ १॥

जब कृष्णको लेन अक्रूर गये सिगरे नर नारि गये बिलखाई।
गोपिन त्राह कियो ब्रजमें अरु नंदजी रोहिणी हाय मचाई ।
भाषत गंगापरसाद यही यशुदाजी हरीसों गई लपटाई ॥
जान वियोग दुहूसुतको हिय फाटि गयो पै दरार न आई॥ २॥

सखनि सन्त सुपूत शिरोमणि मात पिताकी करी सेवकाई ।
नारि बिसारि चले वनको सज कांवरि अन्धन अंध चढ़ाई ॥
नीरके तीर लख्यो अवधेश हन्यो शर खैंच मृगा उर लाई ।
दोहुनको सुतके मरते हिय फाटि गयो पै दरार न आई ॥ ३ ॥

जादिनते चरचा मैं सुनी तुम कान्ह भये सौतन वश जाई।
तादिनते पिअरो भयो गात सो रैनि दिना सब रोवत जाई॥
भोजन पानहूं दीन्ह्यो बिसारि भला टुक प्यारे विलोकहु आई।
और कहा कहिये तुमसों हिय फाटि गयो पै दरार न आई॥४॥

संगी सखानके संगमें सांवरे खेलत खेलत भानुजा जाई।
छिपे श्रीदामें करी जमलेश सो कंदुक बार परी तहँ जाई॥
भागत सों बरजोरी करी सुगोपाल कदम्ब चढ़े अतुराई।
कूदे कलिन्द्री की धारहि माहिं जल फाटिगयो पै दरार न आई५

कालिका धाय मिली जिनको गुरु लोगन में कुल कानि गँवाई
अंक भयो निरशंक भटू सुलटू ह्वै लला सँग प्रीति लगाई॥
एकहि संग रह्यो विधिके रसरंग तरंग लह्यो सुखदाई।
ताहरिके बिछुरे छतियां अलि फाटि गई पै दरार न आई॥६॥

ऐसे नरेश रहे अवधेश सुरेशहुकी जिन कीन्ह बड़ाई।
और महत्व कहां लों कहों करुणानिधिसे सुत गोद खिलाई॥
ते मतिमंद छली तिरिया रघुनन्दनको वन पेलि पठाई।
रामसों बेटा बिछोहतही हिय फाटिगयो पै दरार न आई॥७॥

मो मन पंक समान रह्यो पिय अंक लगे दिन रात बिताई।
सो पय प्रीतम के बिछुरे सजनी यह ह्वेइ गयो पय नाई॥
पंक कटे ह्वै जात दरार सुशील लखो इहि मूरखताई।
जैसो को तैसो लखात अभों हहा फाटिगयो पै दरार न आई॥८॥

खारमें जन्म दियो मुँहतीत को जाने विरंचहि की निपुनाई।

होय जयंती कृष्ण जबै तब ताहि को ल्यायके काज चलाई ॥
नैन लख्यो न तऊ प्रभुको अरु नाहिं गई मुखकी करुआई।
सोचत२ हीय फटो पै ऊपर नेक दरार न आई ॥ ९ ॥

समस्या ४४ वीं– हमें आपने कामते काम अहै कुल के कुल नाम धरोतो धरो।

अमला हम लेतहैं घूस सदा बिन घूसके बात न कोई करो।
चहो मीत गरीब कै आपने हो पर सामने से रहो दूर खरो ॥
सुनिकै यहि बात हमारी अजी मनमें तुम चाहे जरोकै बरो।
हमें आपने कामते काम अहै कुलके कुल नाम धरोतो धरो॥ १ ॥

अबतो हम धर्म समाजी भये शिकवा जग मेरी करो तो करो ॥
नित ढालि है जाय शराब मठी कहिहैं सब लोगकि खोटोखरो।
न पुराणकी मानिहैं बात कछू चहे पूजक मूर्त्ति लरो तो लरो ॥
हमें आपने कामते काम अहै कुलके कुल नाम धरो तो धरो२॥

तिय संग सदा हम चैन करैं पितु मात औ बंधु मरो तो मरो।
नित लूटके लावत कूटिके खात चहै कोऊ देखि जरोके बरो ॥
नहिं धर्म अधर्म से काम कछू डर स्वर्गहू नर्कको नाहिं परो।
हमें आपने काम ते काम अहै कुलके कुल नाम धरो तो धरो॥ ३॥

निज वक्तृता आपने पास रखो इहिते कछु काम हमें न परो ॥
जो हुतो विधिको करनो सो कियो अरु जो उहि भावै भले सोकरो।
धन संपति की परवाह नहीं घर गांव गिरांव बसो उजरो ॥
यह नाक पुरानी हमारी रहै कुलके कुल नाम धरो तो धरो ॥ ४ ॥

अलि व्यर्थ सबै समुझावती हो भय काहूकोहै नाहिं नेकुपरो।
सब आपनी आपनि बातनको मुख खोलके बाहर नाहिं करो ॥
लखि चाल हमारी बुरी अतिही मनमाहिं जरोके टरोके वरो ।
हमें आपने कामते काम अहै कुलके कुल नाम धरो तो धरो॥५॥

अबतो बदनाम भई ब्रजमें घरहाई चबाव करो तो करो।
अपकीरति होहु भले हरिचंद जू सास जेठानी लरो तो लरो ॥
नित देखतो है वह रूप मनोहर लाज पै गाज परो तो परो।
मोहिं आपने कामसों काम अरी,कुलके कुल नाम धरो तो धरो६॥

समस्या ४८वीं—बजनी घुंघरू रजनी उजियारी।

तू समझावति है हितकी अरु मैंतो विचारतिहौं हितकारी ।
मोहनसों चलिकै मिलिये हियकी दुविधा कुल कानि बिसारी ॥
याहि विचार हिये करिकै मिलबे हितहैं हम कीन्ह तयारी।
पै किमिके चलिये सजनी बजनी घुंघरू रजनी उजियारी॥१॥

दाहिने जागति सासु अहै दिशि बाम जगे ननदी बजमारी।
सामुहे धामके पौरहिं माहिं जेठानि परी अहै मौन विचारी ॥
क्यों घबराति सुजान किसों घरि द्वैकलों धीर धरो बनवारी ।
जाँयगी जानि सबै दजिहैं बजनी घुंघरू रजनी उजियारी ॥२॥

कुन्दन क्रीट धरे शिरपै खसि मोरपखा तेहिपै छबिवारी।
सोहत त्यों कटि पीत दुकूल सुजान धरे तेहिपै बँसियारी ॥
कुंज करीलनमें यमुनातट बेगहि आजु लखें चल प्यारी।
नाचत लाल धरे पगमें बजनी घुंघरू रजनी उजियारी ॥ ३ ॥

केसरसों करि मंजन खंजनसे दृग अंजन रेख सँवारी ।
केसरिसों कटि मांह सुजान कसौ तिमि केसरिया रंग सारी ॥
केश सुधारि सुगंधनि सों शुचि मोतिन मांग भरी अति न्यारी ।
तापर साज भई सजनी बजनी घुंघरू रजनी उजियारी ॥ ४ ॥
गोकुलके कुलको तजिकै हरि जादिनते मथुराको सिधारी ।
तादिनते पठयो कछु हाल न लाल सबै सुधि मोरि बिसारी ॥
भूषण भौन सुजान सुहात न आयै हिये सुधि कुंजबिहारी ।
शालतहै नट शालसों ये बजनी घुंघरू रजनी उजियारी ॥ ५ ॥
पूरण चन्द रह्यो छजि जादिन शारद यामिन में मनहारी ।
त्योंहीं सुजान जू रास उमंगमें जादिन बाजतथी करतारी ॥
जादिन भानु लली गल बांहदै नाचतथे वन कुंजबिहारी ।
वाहि दिना बद दीन्ह भुजा बजनी घुंघरू रजनी उजियारी ॥ ६ ॥
सोइ रही हैं चहूंदिशपे ननदी औ जिठानी सखी सँगवारी ।
वीरन वैठे हैं द्वारहिपै करिकैं यह सामुहे सेज तयारी ॥
तापर आई बुलावनको तुम कुंजनमें जहँ कुंजविहारी ।
हाय मैं कैसी करों सजनी बजनी घुंघरू रजनी उजियारी ॥ ७ ॥

समस्या ४६ वीं— देह धरेको यहै फल भाई ॥

नैन लखैं जग सांवरेही मुख गान करै तिहि नाम सुनाई ।
केलि कथानि सुनै श्रुतिते पगते चलिकै ब्रजमें रहे छाई ॥
कोउ कछू कहै कैसहिकै अपने जियमें करे भेद न राई ।
सन्त सुजान बखान करैं बस देह धरेको यहै फल भाई ॥ १ ॥

जाय लखे दृग केलिको धाम जहां मनमोहन रास मचाई।
त्योंहीं सुजान जू कुंज करीलनमें बसिके रटे नाम कन्हाई॥
अंकनि भेंटे कदम्बनको यमुना जलमों करै न्हान सुहाई।
लोटो करै ब्रजके रजमें बस देह धरेको यहै फल भाई॥ २॥

श्रौन सुनै हरिकेलि कथा दृगमें रहै सांवरो रूप समाई।
शीश नवै मुरलीधरको चरणामृत पान करै हरषाई॥
खेलत खात उघात जम्हात सुजान सबै छिन चित्त लगाई।
गान करै यदुनन्दनको जग देह धरेको यहै फल भाई॥ ३॥

द्वै अधरा अधरे विधके अधरामृत पान करै हरषाई।
त्योंहिं सुजान उमंग हिये करि केलि कथा प्रगटै बहुताई॥
चुम्बन चन्द मुखौ मुखके पर्यंकमें जौलों रहै लंपटाई।
न्यारो न अंकते होय छिनो बस देह धरैको यहै फल भाई॥ ४॥

कानन जात सियाबरको लखि लक्ष्मण बोलि उठे हरषाई।
तात बिहाय हमें कित जात कहा हम नाथ करी कुटलाई॥
मातु पिता सुख सम्पति आदि सबै तुम्हरे बिन है दुखदाई।
प्रेम रहै तुम्हरे पद कंजमों देह धरैको यहै फल भाई॥ ५॥

आंनन पूरण चन्द्र समान सजेवर कुन्दसों गात निकाई।
ग्रीव कपोत से सुन्दर राजत चाल लखे गज जात लजाई॥
श्रीफलसे कुच तुंग दोऊ कच ते कटि खीन महाछवि छाई।
या विधके तिय अंक लगै बस देह धरेको यहै फल भाई॥ ६॥

यातनु सुन्दर पाय अरे मन मूरख क्यों न भजै रघुराई।

जासु सनेह कियो गणिका गज गीध अजामिल ने गति पाई ॥
और अधीनकी कौन कथा जग जाने तरे सदनासे कसाई ।
नामन भूलो छिनो मथुरा नर देह धरेको यहै फल भाई ॥ ७ ॥

समस्या ४७वीं—केहि कारण कांप उठी धरती ॥

नाश भयो सतधर्म विचार गऊकी पुकार हियो हरती ।
मानत कोउ न वेदकी रीति अनीति कुनीति नहीं टरती ॥
त्याग दियो निज धर्म सुधर्म सुधर्मिन सैनकी शाह करै भरती ।
शंकर रूसकी त्रास बढ़ी यहिकारणें कांप उठी धरती ॥ १ ॥
श्रीयुत साहेब एलगिन लार्डकी आमद देख सती डरती
एकट कोउ न त्रास करें द्विज गायनकी करै कौन गती ॥
भारतवासी प्रजानके मालिक हिंदमें आप महान गती ।
धर्ममें बाधा न डारै कभौं इहि कारण कांप उठी धरती ॥ २ ॥

समस्या४८ वीं—नन्दके अजिरमें खेलत नंदलाल हैं ॥

जाकी शेश शंकर सुरेश सनकादि अज नारद मुनीश ध्यान ध्यावैं तिहुँकाल हैं।करत विविध जाप यज्ञ जागरण तप जाके हेतु मुनि जन सहत कशाल हैं॥जाकी शुचि महिमा बखानत दिवस निशि नेतिके पुकारयो श्रुतिवंद सुख जालहैं। जायकै लखै न किम रूप धे सुजान सोई नन्दके अजिरमें खेलत नंदलाल हैं ॥ १ ॥
श्वासन चढ़ाय कुश कासन पै आसनके करिक उपासन क्यो सहत कशालहैं। ज्वलित हुतासनमें दाहे वपु वादिकाहे होकर दिगम्बर औ ओढे मृगछाल हैं ॥ घूमि २ तीरथ क्यों सहियै सजान दुख इत उत वादि वितइये काहे काल हैं। जाय वि

श्रमहि लखे न किन वाको जोय नन्दके अजिरमें खेलत नंद-लाल हैं ॥ २ ॥

पिंगल दुकूल कटि मुकुट जटित शीश चोतनि चटकदार मोतिनके माल हैं । चन्दन तिलक भाल लकुट भुजा विशाल लिये हैं खुशाल बोल बोलत रसाल हैं। चकई चटक चारु फेरत अनूप कर लटू लखे लाल लटू भई ब्रजवाल हैं । हौं तो लखि आई निज नैननते याही विध नन्दके अजिरमें खेलत नंदलाल हैं ॥ ३ ॥

माखनके चोरिवोको हियमें विचारि करि पैठो एक ग्वालिनके धाममें गुपाल हैं।सुकबि सुजान तेहि औसर अचानके चुरावत हरीको लखि लीन्हो ब्रजवाल हैं ॥ ह्वैके चुप चाप डारि दारिके कपाट चलीं यशुदाको लाइके दिखैबेको यह हाल हैं। ऐसो हिय शोच नन्दधाम उतजाय तोपै नन्दके अजिरमें खेलत नन्दलाल हैं॥ ४

समस्या ४९वीं—मकरन्दके कन्द भुलान्यो अली ॥

तनु श्याम सजे पटपीत "फते" मुरलीध्वनि सों लियो चित्त छली ।
छकि सौरभ पुष्प परागनकी मन रम्य प्रफुल्लित मंजु कली ॥
मधु अंध भयो मृदु मन्द सुगन्धन मत्त कियो मनमोह चली ।
रस लीन प्रवीनता छीन भई मकरन्दके फन्द भुलान्यो अली १ ॥

समस्या ५०वीं—नाचत कुंजमें कुंजबिहारी ॥

शंकरसे सुर सिद्ध सबै जेहि भेद न पावत ध्यान मंझारी ।
शेष सुरेश थके भनिवेद अजो जिनके कछु वार न पारी ॥

जाहि सदा षट चारि दसाठ सुहारि हिये केहि नेति पुकारी ।
प्रेमके डोरे सुजान बँधे सोइ नाचत कुंजमें कुंजविहारी ॥ १ ॥
मंडित कुंडल कुन्दनके श्रुति चन्द्रकला युग ज्यों उजियारी ।
तैसो सुजान कसे पटपीतहिं मोरपखा शिर है छबिवारी ॥
सो लखिकै युवती घिरके मनमत्त ह्वै गावत दैकरतारी ।
बांह धरे वृषभानु सुतागर नाचत कुंजमें कुंजविहारी ॥ २ ॥
पूरण चन्द्रकला निकस्यो नभ शारद यामिनिमें मनहारी ।
होत सुजान हुलास हिये करि रास प्रकाश कियो बनवारी ॥
सो सुनिकै श्रुतितें वनिता उलटे पुलटे अंग भूषण धारी ।
धाय मिली ललना हरिसों जहँ नाचत कुंजमें कुंजबिहारी ॥ ३ ॥
बाजत ताल मृदंग उपंग पखायुज बीण महा मनहारी ।
छाजत छत्र छपाकरके क्षिति लाजत कोटिक मैन निहारी ॥
राजति मंडिल नारिनके मधि भ्राजत भानुलली बनवारी ।
काज तकै मत जाय लखै इमि नाचत कुंजमें कुंजबिहारी ॥ ४ ॥
क्रूर अक्रूर भयो ब्रजके ब्रजराजको लै मथुराको सिधारी ।
तादिनते दुख दूनो बढ़ो कछु बूझ परे न भूल्यो सुधि सारी ॥
प्यारे सुजान वियोगहुपै उर आवत भाषिये बात हमारी ।
भानुसुता गर बांह धरे अजों नाचत कुंजमें कुंजबिहारी ॥ ५ ॥
जाहिन जान सकें चतुरानन ध्यानहूं में न लहें त्रिपुरारी ।
वेदहुभेद न जासु लहे सर्वज्ञ अनन्त कोटि पुरारी ॥
रास बिलास समै यमुना तट संग लिये बहु ग्वारि गवारी ।

प्रेम भरे गरे हाथ धरे सोइ नाचत कुंजमें कुंजविहारी ॥ ६ ॥
जिन बीन बजाय बुलाय सबै छतियां सों लगाय २ निहारी।
अपने कर भूषण वस्त्र सुधारत अंजन आंजि शृंगार सँवारी ॥
तिन कूबरिके वश ह्वै सजनी ब्रजकी सब ग्वारि गँवारि विसारी।
सुध आवतही फटजात हिया जब नाचत कुंजमें कुंजविहारी॥७॥

समस्या ८१ वीं—बालिका वियोग नंदलालके विहाल है।
लेवाय कृष्णको गये अक्रूर साथलै बुलाय हाय भूप कंसधौं करैगो कौन हालहै। समूह यातुधान जोरि चित्त ठानि मारिवो वृथा विसाह बैरको करी महा कुचालहै । सखी दशा इतै फते सुनी न जात कानदे बढी प्रचण्ड गातमें तरंग प्रेम ज्वालैह। विसारि खान पानं नींद ध्यानही किये हिये सुबालिका वियोग नंदलाल के विहालैह ॥ १ ॥

कहाय श्याम राधिका भयेहैं कृष्ण कूबरी नशाय लोकलाज कौन ये गही कुचालहै। बढी तरंग प्रेमकी अधीर ह्वै कहै फते दहै शरीर को ऊधो संदेश योग ज्वालहै॥रमाय भस्म अंगमें रंगाय वस्त्र योगनी फिरेंगी द्वार२जो बनेगो कौन हालहै । हृदय अनंद मालिका फँसाय मोह जालिका सुबालिका वियोग नंदलालके विहाल है ॥ २ ॥

पडी कहंराती घबराती रहै भवन माहिं बूझ्यो नहीं जाहि करदियो रहे गालहै।भूषन बसन औसनकी न चाह कछू दिनो दिन पीरो मुख में जानू बशकालहै । ओषधि खिलाऊं की बुलाऊं कोऊ पंडितको खंडित करे दुखको विचार कर फालहै।

देख भालकै के हर्षरामने सुनायो बैन सु बालिका बियोग नंद-
लालके बिहालहै ॥ ३ ॥

समस्या ८२वीं—पै तेरे एकौ अंगना ॥

सुहायो प्रीति अंगना, सनेहकी तरंगना, सुभाव की उमंगना
कियो प्रभुहिं अपंगना । भईहै मति भंगना पियेहै कछु भंगना,
कोऊ डस्यो भुजंगना जो ये तजे कुसंगना । "फते" है कवि
गंगना, जो लावे तुक अंगना, जो होत्यो सतसंगना तो आत्यो
ऐसो ढंगना । न देखे ग्वाल अंगना जो चाहे देव अंगना सो ठाढ़े
तेरे अंगना पै तेरे एको अंगना ॥ १ ॥

समस्या८३वीं—केहि कारण चन्द्र पिपीलन खायो ॥

डोलत पंथ वृथा मरिजात सबै मिलिके इक मंत्र उपायो ।
और उपाय न सूझे कछू चलि पीवें पियूष मिलै नियरायो ॥
गंग दयाल सदाशिवजी सबसों यह आकर सों दरशायो ।
जीवन आश विचारि हियो यहि कारण चन्द्र पिपीलन खायो १॥

शिव ब्याह मुहूरत आयो जबै तबहीं गिरिजा यह बैन सुनायो।
द्वै नर संग न भौंर फिरों अह नाथ ललाटपै चन्द्र बसायो ॥
बातसुने तज भूमि धरे रस लोभ पिपीलन चाट चबायो ।
महाबीर सती सत नामरहै इहि कारण चन्द्र पिपीलन खायो॥२॥

बैठि अलीगण आपसमें बतरात रहीं बहु बात सुहायो ।
ताहि समै इक नारि नबेली भरी मद जोबन जाति लखायो ॥
देखि सुशील खुले पट घूंघट आनन शीतला दाग बुझायो ।

पूंछि उठी इकसों इक यों केहि कारण चन्द्र पिपीलन खायो॥ ३॥
आनन नासिका गोल कपोल त्यों अमृतसों अधरा लपटायो।
हैं सबमें वे मिठास भरे मधु जासु मिठोपन जात लजायो ॥
कौन न चाहत पावनको तिहि काहिं सुशील नहीं जग भायो।
दाग न शीतलाकोहै मनो मधुकारण चन्द्र पिपीलन खायो॥ ४॥
वैद्यक भावप्रकाशमें दीखहै इन्दुकी संज्ञा कपूरहि खायो।
पागमें डारि सुगंधिके हेतु वनावत मोद कहें मन भायो ॥
शर्कराके हित चीटीं चलीं गंगाप्रसाद विचारि सुनायो।
वन्दकी वृन्द लखी चखने तेहि कारण चन्द्र पिपीलन खायो॥ ५॥
एक-समय पद्मासन मारि सो बैठ सदाशिव ध्यान लगायो।
सोहत सुन्दर व्याल गरे पुनि मस्तक चन्द्र औ गंग सुहायो॥
उज्ज्वल अंग विभूति रमाय सो खेचरी साधनमें मन लायो।
बैठ महेश समाधि लगाय यहि कारण चन्द्र पिपीलन खायो॥ ६॥
अंक मयंक मुखी सुतको धर व्योम छयो निशिनाथ दिखायो।
छैल छबीले लला हरखें निरखें शशिमोदक मात बतायो ॥
छाय गयो घन आय तबै न लखाय पर्‍यो तबहीं बिलखायो।
माय मनावत रोवतरे केहि कारण चन्द्र पिपीलन खायो ॥७॥
वेदनमें तो नहीं गम है पै पुराणन माहिं कहूं न सुनायो।
पूंछतहौं जिहि पंडितसे करिक्रोध कहै यह झूठ बनायो ॥
मित्र यह कैसे कवित्त बनै गंगा परशादको वेगचितायो।
कैसे वृथा हम झूंठ लिखैं केहि कारण चन्द्र पिपीलन खायो॥ ८॥
समस्या९४वीं—हम ना वरती तुम्हेंको वरतो ॥

शमशान विभूति वताओ भला करले निजको तनुमें भरतो ।
अंगिया मलि कौन छकातो दमोदर कौन कही मनकी करतो ॥
अवलोकतो कौन भयावनो भेष नहीं अपने मनमें डरतो ।
गिरिजा शिवसों यहि भांति कहैं हमना बरतीं तुम्हेंको बरतो १ ॥
बरतो नहिं कोउ तुम्हें कबहूं कर पीठ कपालु जुपै भरतो ॥
मरतो तिम कौन अहीशन शीशन शीश लखे मति नाहरतो ।
हरतो श्रम कौन दमोदर जू सुखमा दिशि वाम भले भरतो ॥
भरतो नहिं काहूको होत अजों हमना बरती तुम्हेंको बरतो ॥ २ ॥
वृपयान पै खप्पर खंग लिये अर्द्धंग भये पगको धरतो ।
डमरू तिरशूल जटा अहि देख पिशाचनी संगतिको करतो ॥
वसि कानन कौन सदैव फते चित चिंतित ह्वै दुखको भरतो ।
गिरिराजसुता कहै शंकर सों हम ना बरती तुम्हेंको बरतो ॥ ३ ॥

समस्या९९वीं—दुहुँ लोकनमें यश छावतु है ॥

जन्मे जन्मे वह अन्त मरे एक धर्मही संगमें जावतु है ।
धन सम्पति मीत सखा परिवार त्रिया घर काम न आवतु है ॥
धन्य वही नित धर्म करै सिय राम सों नेह लगावतु है ।
सुख पावत है सब भांतिन सों दुहुँ लोकनमें यश छावतु है ॥ १ ॥
धन सो धन पाय जो धर्म करै अभिमान नहीं जिय लावतु है ।
धन जो परिकै उपकारहिंमें लगि वैस सदाही वितावतु है ॥
धन सो जो करै सतसंग सदा रघुनन्दनको गुन गावतु है ।
सुख होत महा अस लोगनको दुहुँ लोकनमें यश छावतु है ॥ २ ॥

सदाहि धन कोटि कमाई करै पर धर्म नहीं जो कमावतु है।
वह अंत समय अकुलात महा घबरावतु है पछतावतु है॥
धन अन्त न आवत काम कछू इक धर्मही संगमें जावतु है।
परलोक बने नरलोक बने दोहुँ लोकनमें यश छावतु है॥ ३॥
उपकार दया क्षमा शीलरखे रघुनन्दनको गुण गावतु है।
नहिं भूलहूं पांव कुपंथ धरै परकारज देह लगावतु है॥
अभिमान न लावत है कबहूं उर पापिनको डरपावतु है।
अस लोगनको सब धन्य कहैं दुहुँ लोकनमें यश छावतु है॥ ४॥
करिकै रघुनन्दनको गुणगान जो आपुन जन्म वितावतु है।
नहिं पावत है दुख लेश कभौं भव शूल समूल नशावतु है॥
डरनेक नहीं यमदूतनको तेहि अन्त समय दरशावतु है।
नर देह सबै धन धन्य भनै दुहुँ लोकनमें यश छावतु है॥ ५॥
तनुसों परको उपकार करै मनसों हरि ध्यान लगावतु है।
दृग सों हरिमूरतको निरखे पग तीरथ तीरथ जावतु है॥
रघुनाथ कथा नित श्रवण सुने रसना हरिनाम रटावतु है।
धन पाइके धर्म करै तिहको दुहुँ लोकनमें यश छावतु है॥ ६॥
मुख सोहत हैं हरिनाम लिये कर दान दिये भल भावतु है।
तनु सोहत है उपकार किये पग सोहत तीरथ जावतु है॥
सुत सोहत मानत मात पिता धन खर्चत धर्म्म सुहावतु है।
त्रियसोह सुशीलपती व्रततें दुहुँ लोकनमें यश छावतु है॥ ७॥
नित जो हरिको गुणगावत है मन योग समाधि लगावतु है।
तजि मोह मया गृहिनी गृहको बसि कानन वैस वितावतु है॥

निजको न जनावत काहुहसे हरं भांतिनहीं जो छिपावतु है।
तऊ केवड़ा फूल सुवास लओ दुहुँ लोकनमें यश छावतु है॥८॥
वन वाटिका जो न लगावत है सर कूपको जो न खनावतुहै।
पुनि मंदिर जो न वनावत हैं धन दान न जो न लुटावतु है॥
तपसी वन खाक रमाय तनैं कहुँ तीरथ जौन न जावतु है।
तेहु कोकाराम भजेहूं नहीं दुहुँ लोकनमें यश छावतु है॥९॥
उपकार समान न धर्म कछू जगमाहिं इको दरशावतु है।
यह ज्ञान सुजान दयानिधि कान्ह पै दीन विनय पहुँचावतु है॥
अव कान्ह करो न विलम्ब करो प्रभू जीव महा घबरावतुहै॥
न सुशील किये विनु दीन दया दुहुँ लोकब में यश छावतुहै १०

समस्या ५६ वीं— केहि कारण भारत गारदभा।

वेद पुराणको जाने नहीं पितु मातु को यार निरादर भा॥
पति छोड़के गैर करैं दुहिता द्विज जातको काम सबैरदभा।
ठग चोर चंडाल फिरैं बहुते समताके नहीं कोइ शारदभा।
भगवानदास कहैं समझाय यहि कारण भारत गारदभा॥ १॥
विद्या न पढ़ी बड़ी फूट बढ़ी अरु गाय कसाइन मारत भा।
निज देशकी वस्तु नहीं प्रियहैं उपदेशक नित्त पुकारक भा॥
दस्तकारी विचारी सिधारी नहीं द्वज लाल दुलारे उचारत भा।
व्यवपार विसार दई किरपी यहि कारण भारत गारद भा ४२॥
फूटको बीज वयो सबदेश अरु झूंठ को वास सबै घर भा।
जात कुजातकी पूंछ रही नहीं राज्य से एक सभी जगभा॥

कुल पद्धति छूटिगई सबते जब इंगलिश भानु प्रकाशितभा।
निजउद्यम रीति व्यवपार तज्यो यहि कारण भारत गारदभा॥ ३॥

समस्या ८७ वीं— लागि जो जाय तो कीजे कहा सखि ये अँखियाँ रिझवार हमारी।

सुन्दर गोल कपोलन पै अनमोल सो कुंडल डोलन प्यारी॥
हो हलंके द्युति मोहनकी झलकैं छुथरी अलकैं घुंघरारी।
वा मुसक्यान विलोकतही कुलकान सबै तजि होत विदारी॥
लागि जो जाय तो कीजे कहा सखि ये अंखियां रिझवार हमारी

है अति भीत चवाइनको हँसिहै अरि पापिनदै करतारी १॥
लाज गई ब्रजलाल विलोकत आजुलों मैं कुलकान सँभारी॥
आवत जात सदा यहि गैल सों छैल छबील नं कुंज विहारी।
लागि जो जाय तो कीजेकहा सखि ये अँखियाँ रिझवार हमारी॥

देत सदा सिख तू सजनी अरु मैंहूं विचारत हौं हितकारी।
मान किये गुणमान कहें सनमान बढ़ै फिर है हितभारी॥
मोहनी मूरति मोहनकी अवलोकन लोक रिझावन हारी।
लागि जो जाय तो कीजे कहा सखि ये अँखिया रिझवार हमारी

समस्या८८ वीं—यह पाखें पतिव्रत ताखें धरों।

ऋतु पावस आयगो भागनते संगलालके कुंजनमें विहरो।
नहिं पाइहों औसर और जूवत्व कहा अब लाज लजायं मरो॥
गुरु लोग औ चौंच दहाइन सों बिरथा केहि कारण वीर डरो।
चलिचाखें सुधा अभिलाषें हिये यहि पाखें पतिव्रत ताखेंधरो॥ १

यह सावन शोक नशावन है मनभावन यामें न लाज करौ।
यमुनापै चलौ सो सबै मिलिकै अलगाय बजायकै पीर हरौ॥
इमि भाषतहै हरिचंद पिया अहो लाड़िली यामें न धीर धरौ।
चलि झूलो झुलाओ झुको उझको यहि पाखें पतिव्रत ताखें धरौं

लीने अबीर भरे पिचका रसखानि खरो बहु भाय भरोजू।
मारसे गोप कुमारसे दीखत ध्यान टरों न टरो न टरोजू॥
पूरव पुण्य न हाथ परयो तुम राज करो उठि काज करोजू।
ताहि सरो लखि लाख जरो यहि पाखें पतीव्रत ताखें धरोजू॥ ३

समस्या८९वीं—लपटाने दोऊ पटताने परे हैं॥

हास विलास बढ़ाय भली विध चुम्बन भांति अनेक करे हैं।
प्रेम प्रतीतिकी बातनको कहि प्यारे उरोजन हाथ धरे हैं॥
रीति रची विपरीति आनन्दित प्यारी विषयके सुहीय हरे हैं।
शंकर खोज मनोज विथा लपटाने दोऊ पटताने परे हैं॥ १॥

मैं अरु मेरी प्रिया निज रूपके प्रेम समुद्रमें साने परे हैं।
रंचक चाह नहीं चितमें रहे आनंदके उर आने परे हैं॥
धीरज तासु बिछौना किये और तोषकी चादर माने परे हैं।
शंकर आतम सुरत लिये लपटाने दोऊ पटताने परे हैं॥ २॥

राधिका माधव दोऊ मिले सो प्रेमके पंथ पगाने परे हैं।
रति रंग तरंग कियो सुखसों नये नेहमें यों रस साने परे हैं॥
रामनरायण त्यों मनुहार विहार सो हार थकाने परे हैं।
घरी चारिक द्यौस चढ़ो अवलों लपटाने दोऊ पटताने परे हैं ३

कामकलाकी उमंगनसों रसरंग तरंग सुमंजु भरे हैं ।
चूमिकै गोल कपोलनको करकंज उरोजन हाथ धरे हैं ॥
छाकि सुधा मधुराधुरको कवि लालजी चारु विनोद भरे हैं ।
"सी" कर सेजमें शीत समय लपटाने दोऊ पटताने परे हैं ॥ ४ ॥

समस्या ६०वीं—मनोजके हाय हवाले परी ॥

जब चौगुन चाह तरंग बढ़ी नाहिं जात हिये विच धीर धरी ।
यह दुर्बल देह भई सिगरी बिरहानलमें अब जात जरी ॥
लखि व्याकुलता मम ऐ सजनी नहिं कोउ उपाय बतावै अरी।
अजहूं नहीं प्रीतम आयो फतेह मनोजके हाय हवाले परी ॥ १ ॥
पहिले ही संभार कियो न सखी सखियानके सीखके जाले परी।
रसियाकी सुनी बँसिया जबते तबते भ्रमनाके भ्रमाले परी ॥
कहि सांची कह्री सितकंठ सुजान सुजानके तानके पाले परी ।
मनमाने न रोज रही समुझाय मनोजके हाय हवाले परी ॥ २ ॥
पति प्रीतिके भारन जात उतै मतिके दुख भारन साले परी ।
मुख बातते होती मलीन सदा सोई मूरति पौनके पाले परी ॥
द्विज देव अहो करतार कछू करतूति न रावरे आले परी ।
यह नाहक गोरी गुलाबकलीसी मनोजके हाय हवाले परी ॥ ३ ॥

समस्या ६१वीं—है ऋतुराज वसंतको आवन ॥

आवनकी कर औध गयो पर आये नहीं अजहूं मनभावन ।
भाव न एकहू काज सखी बिन पीव रही जियरा तरसावन ॥
सावनहींसे वियोग भये पपिहा रहौ पीव को शब्द सुनावन ।

नावन औधिकी और फते यहहै ऋतुराज बसंतको आव
कोकिल केकी चकोर सुकीरनकी.व लगै बरबोल स
वस्तु सजे सरदारखरे द्रुम सूहे विचित्र सुरंग सुनावन ॥
मंत्री रतीस समीर सदूत पठाय भजे बल लागे जनावन.
पूरी छटा क्षितिछाई छबीली किहै ऋतुराज बसंत को आव

समस्या ६२ वीं– आयो बसंत पै कंत न आयो।
कुंजन केलि कुहूके लगीं पिक मोर चहूं दिश शोर मचा
भौंरन भीर जुरी चहुंघानि सरोजन पुंज परागिन छायो।
अम्बक वम्ब लयो किसलै वरु मंजरि सुन्दर रूप लखा
कैसे रहे उर धीर भटू कतु आयो बसंत पै कंत न आयो

वल्ली वितान तने वनधाम रहे तृसा मेदिन फर्स बिछा
पौन वजीर तृचात्रय भाष्य लये अमली अलिवाद्य बज
चारणकेलि सुजान पढ़े यश कीर कपोतन गाज सुनायो।
मान गढ़ी तिय तोहनको नृप आयो बसंत पै कंत न आयो

कीन्ह कुभांति तमालनि कुंज रसालनिको विन पत्र
वारिं दये तरु ढ़ाखन ज्वाल दुखी कर केलिन कूक ब
मैन बिगारि सुजान दई सिगरे जगको विन मान करायो
क्यों नहिं मोह दिखाय भटू जोपै आयो बसंत पै कंत न

गौन कराय लिवायके भौंन पिया जब जान विदेश सु
मैं कितनो समझायरही अबहीं हरि मोहिं तजै कित जाय
पै हरिएक सुनी नहिं कान गयो कहिं औध बसंत बता

ाह सुजान भयो विपरीति कि आयो वसंत पै कंत न आयो।४

समस्या ६३ वीं—एरी भटू ऋतु आई वसंत है।

ाग बागन फूले हैं फूल अनेकन रंग सुगंधन कौन भनन्तहै ॥
खे न कानन जे द्रुम पुष्प सो जानत याहि दवाग्नि अनन्त है।
ागि फिरें लखि आगी पलाशन ऐसे थेरे सखी बावरे कन्तहैं ॥
ाहर होयके देखौं तिहूं कढ़ि ऐरी भटू ऋतु आई वसन्तहै ॥ १ ॥
सोहैं शरीर सुरंगित पीपर वल्लनकी छबि छाई अनन्तहै।
योहीं फते बन बागनके नव पल्लव फूलन वायु बहन्तहै ॥
र भये हिम त्रास सबै सुखदायक चित्त तरंग उठन्तहै।
शयो चहूंदिश मंगल पै बिरहीनकी बैरन आई बसन्तहै ॥ २ ॥

समस्या ६४ वीं— ऋतुराजके चिह्न दिखान लगे।

रियारी कृषीन की क्यारिन पै सरसों चहुँधा पियरान लगे ॥
म जम्बु रसालन बौर फते चहुँओर सुगंध उड़ान लगे।
न कोकिल चातक मोरनकी ध्वनि कानन चित्त लोभान लगे॥
हेमत्रास सबै बिनशान लगे ऋतुराजके चिह्न दिखान लगे ॥ १ ॥
बन फूले पलाश दवारसे दीशत शोभा भरे लहरान लगे।
वनि सारस मोरनकी चहुंधा पिक चातक शब्द सुनान लगे ॥
दु मंजिर गंध रसालनपै रसपी अली बृन्द उड़ान लगे।
हेम त्रास सबै विनशान लगे ऋतुराजके चिह्न दिखानलगे ॥ २ ॥

समस्या ६५ वीं— नैन लगे अँसुवा बरसावन।

ावन आयो न आये पिया सखियां लगीं राग मलार सुनावन ॥

नाव न जानों भटू वह गांव को छाये हमारे जहां मनभावन ।
भावन लागी घटा सबके जिय लालन मोहिं लगे कलपावन ॥
पावन लागे महादुख प्राण सु नैन लगे अँसुवा बरसावन ॥ १ ॥

समस्या६६वीं—ब्रज अलबेलिनमें बेलिनमें बरसन ।

चहुंकित कुंजनमें परम निकुंजनमें पुंजन पलासन पतान लागेपरसन कवि मदनेश ठौर२भौंर भीरन पै सुरभि समीरन सुमीरन पै सरसन अम्बन अवनि कदम्बनकोकिला पै विदित बसंत यों दिसान लाग्यो दरशन । काम कर केलिनमें सकल सहेलिनमें ब्रज अलबेलिनमें बेलिनमें बरसन ॥ १ ॥

चन्द्र चैत चांदनीमें चारु चौक चांदनीमें चम्पक चमेली चोवा चन्दनकी चरसन । शीतल मलिन्द अलिविन्द मकरंदनमें सर सारि नीरन समीरनमें सरसन । कोकिल निकुंज पुंज किंशुक कदम्बन में अम्बनमें ओनिमें दिगम्बरमें दरशन।वृन्दावन हेलिन नवेलिन बसंत लाग्यो, ब्रज अलबेलिनमें बेलिनमें बरसन ॥ २॥

समस्या६७वीं—वीरबली धुरवा धमकावें ॥

धूरि भरे मतवारे महानभमें चहुँ ओर ते धावत आवें ।
हाथ सुरेश शरासन तानत बुंदके बाण घने बरषावैं ॥
सेवक जानि अकेलहि मोहिं न नेकहु हाय दया उरलावें ।
को बरजे पियप्यारे तुम्हें बिन वीर बली धुरवा धमकावें ॥ १ ॥

सेवक पावस भूपति संग घनी बग पांतिकी सैन सुहावें ।
दादुर कोकिल मोरनकी व समीर तुरंग इतै उत धावें ।

इन्द्र शरासन बुन्दके वान गराजत दुंदुभी घोर बजावें।
भान गढ़ी तन तोरन कारन वीरवली धुरवा धमकावें ॥ २ ॥
तुंगन तोपि चहूं दिशिते नभ भीर वलाक लै धीर मिटावैं।
त्योंही पराग भरे मद सों गरजैं अतिहीं जुगनू चमकावें ॥
सीरी समीर सहाय लिये लखु लोनी लवंग लता लम कावें।
धावें गहे चपलाकी कृपानि ये वीरवली धुरवा धमकावें ॥ ३ ॥
शोरकै घेरे घने २ आय बड़ी बड़ी बुंदनको वरसावें।
लीन्हे जमाति फिरे बक पांति सुहात न नेक सबै तनतावें ॥
धावें चहूंदिश भावे भरी ललिते अस विज्जु छटा चमकावें।
पीय बिना बलहीन विचारिके वीरवली धुरधा धमकावें ॥ ४॥
टेरो करो पहिहा दिन रात औ मोर चहे तितो शोर मचावें।
गायो करें अलि आयो करै बकधायो करें जुगनू जित भावें ॥
डोले समीर सुभायनसों ललिते चपला कलाकोटि दिखावें।
पीयके अंक निशंक लगी अब वीरवलीं धुरवा धमकावें ॥ ५ ॥

समस्या६८वीं–राग भरी वह फागकी गावनि ॥

मेलनि कंठ भुजानिदै खेलनि झेलनि झोरि गुलाब उडावनि
धूंधरि धूम धमारिनकी धँसि धावनि औ बलके गह लावनि ॥
त्यों ललिते लपटानि सुबानि सों,तानं भरी पिचकानि चलावनि
आजु लखी नंदवार सखी भली राग भरी वह फागकी गावनि १
लाल भयो नभ देखि परे सब मेघ समान गुलालकी छावनि।
ह्वै झरसी रही केशरि नीरकी कीच मची यहि वीच सुहावनि ॥

त्यों ललिते चमकें चपला सम बाल भरी मदमोद बढ़ावनि। भाग भरी ब्रज देखो सुनो सब राग भरी वह फागकी गावनि २॥

समस्या६९वीं—भाग भरे मुखपै सुहाग बरसत है॥

पीरीशाल ओढ़नी पहै रही अजब आब मंजु महताबकी झलक तरसत है। उरज उठान मन्द मुसक्यान हूपै कछू ओज गुण अधर अमीको परसत है। कवि लछिराम कल भ्रूधनु मरोरदार कोरदार लोचनमें खाली सरसत है। जागे रंगजोबन अनंग अनुराग रूख भाग भरे मुख पै सुहाग बरसत है॥ १॥

कुन्दनसों रंग नव जोबन सुरंग उठे उरज उतंग धन्य प्यारी परसतहै। सोहत किनारी वारी तन सुखकारी देवशीश शशिफूल अधखुलो दरशातहै। वंदिया जडाऊ बड़े मोतिनसों नीकी नथ हँसत तरौननमें रूप सरसत है। गोरी गंजगौनी लोनी लवन दुलहियाके भाग भरे मुखपै सुहाग वरसतहै॥ २॥

समस्या ७० वीं—रंग दूसरो और चढ़ैगो नहीं अलि सांवरो रंग रँग्यो सो रँग्यो।

लखिकै मनमोहन मोहनी रूप सखी मन मेरचो ठग्यो सो ठग्यो। इन चांचदहायनकी को सुने अबतो जियजाय लग्यो सो लग्यो। उत्पात हजारन क्यों न करै चित छूटे न प्रेम पग्यो सो पग्यो॥ रंग दूसरो और चढैगो नहीं अति साँवरो रंग रँग्यो सो रँग्यो॥ १॥
[illegible]रह नैनदुनाली भुसुंडीसी फेरनि हीय हमारो दग्यो सो दग्यो।
अहे सा[illegible] [illegible]रोस हवास सखी इक साथ भग्यो सो भग्यो।

अबना कढ़िहै कढ़हूं न कहूं पर दागतो आन लग्यो सो लग्यो ॥
रँग दूसरो और चढ़ेगो नहीं अलि सांवरे रंग रँग्यो सो रँग्यो ॥ २

समस्या ७१ वीं– हम प्रेमकी वारुणी छान चुकीं।

जिनकी पद धूर चहें अज शंभु तिन्हें हमतो पहिचान चुकीं ॥
तजिकै कुल कानि सबै तेहिसों यह प्रीति अनूपम ठानि चुकीं।
जोहिको सिगरी बनितान चबाइन या चरचानिमें जानि चुकीं।
कोउ केतो बुझाय कहे अवतो हम प्रेमकी वारुणी छानचुकीं १

अबका समुझावतहौ हमको सबकी बतियां हम जानचुकीं।
जिनको सनकादि न भेद लहें इमि सारी सयानी बखान चुकीं॥
तिनकी छतियां लगके ब्रजनार सबै निज प्रीतम मान चुकीं।
अरी ऐरी भला तिनसों हमहूं अब प्रेमकी वारुणी छानचुकीं २॥

समस्या ७२ वीं–सखीरी शिखापन तेरो भलो ॥

त्रिय एकही एक सिखाय रही जगमें शुभ पंथ निहार चलो ॥
जप दान पतिव्रत शोधि हिये नांहिं स्वारथमें परचित्त छलो।
सत साहस शील सनेह फते श्रमधीर दया मनमें रखलो ॥
इतनी सुन बोल उठी मुसक्याय सखीरी शिखापन तेरोभलो॥ १ ॥

प्रथमें न चहो चित्त तेतो कहो निबहो मनमोहनसों जबलौं।
न सहीरी वियोगकी बीराविथा न संयोगकी सौजनसों अबलों ॥
हारि आये अजों न रहों धौं कहा विरहानलसों जियजात जलो।
कवि सांची कहै सित कंठ सुजान सखीरी शिखापन तेरोभलो २

नँदलालकी प्रीति प्रवाह अथाहमें क्योंहीं दिनोदिन जातगलो।
तजि भूषण अंग शृंगार सबै सुधि आठहूयाम जलोंकी बलो ॥

मथुरा ससुरामें बसें हरखूं तुम जानत नाहिन वाहि छलो।
वह गूजरी ऊजरी वूझे कहारी सखीरी शिखापन तेरो भलो॥ ३॥
उठ एरी लली इकवात कहूं नेकु मूरति आजकी देखो चलो॥
वांसकी वांसुरी हाथ गहे जुडि छांह कदम्बके डार तलो॥
घुंघरारी लसें लटकैं मुखपै रुचिसाल हिये बनमाल गलो।
हरषीं यह वैन सुनाय तबै सखीरी शिखापन तेरो भलो॥ ४॥

समस्या ७३ वीं– बरिहैं हरि ये मिथिलेश कुमारी।

मिथिलापुर देखन राम चले सुनि बाम सबै निज काम बिसारी।
चढ़ीं धायके आपने धौल अटारी निहार स्वरूप भईसो सुखारी॥
वर सांवरे योग सियाके सखी परचाप अहै शिवको अतिभारी।
किमिताहि उठाय चढ़ाय केरी बरिहैं हरि ये मिथिलेश कुमारी १
रामको रूप लख्यो जब सीय भवानीके मंदिर माहिं पधारी।
अम्बतोही विनवों कर जोरि दयाकर कारज देहु सुधारी॥
ध्यानमें लीन भई शिव सीय तबै गिरिजा यह वैन उचारी।
धीर धरो चित चेत करो बरिहैं हरि ये मिथिलेश कुमारी॥ २॥
दापसों चाप उठाय थके शिव काहु न ताहि सके तिलटारी।
हाय भई भुव भट्ट विहीन कह्यो मिथिलेश विशेष दुखारी॥
वैन सुने भे सरोष सौमित्र सो नैनके सैनते राम निवारी।
रामकी चातुर देखि कहैं बरिहैं हरि ये मिथिलेश कुमारी॥ ३॥

समस्या ७४ वीं– वाही समय पुनि जान परेगो।

तू मन मूरख चेतत ना मदमातो भयो जगमाहिं फिरेगो॥
जो मन आव सोई नहिं आवत वेद कलाम को टार धरेगो।

व्यर्थ अनर्थ कियो जगमें कछु अर्थ नहीं सोइ काम परेगो ॥
जादिन काल कराल ग्रसे कच वाही समय पुनि जान परेगो १॥

मनमानी करी न भली सजनी इन बातनसों नहिंकाज सरेगो
कोटिनबार बुझाय कही पिय प्रीतम को कछु ध्यान धरेगो ॥
होगी वही घर जान जरूरहिं लाख उपाय करे न टरेगो ।
पुछिहैं हंरखूकी कथा धरकै तब वाही समय पुनि जान परेगो २।

छोड़तहो तुमतो मगमें संगकी सखियां सब आंप धरेगो ।
चुगली करिहैं निज लोगन तें कुलकानिकी हानि हमें ठहरेगो ।
अनुरागमें आग सुझेगी जबै मम भ्रात पिता तुमते झगरेगो ।
मेरीकहा हरषू की कहा तब वाही समय पुनि जान परेगो॥३।
सत्य क्षमा न दया तनमें कबलोंधन पापको प्राप्त करेगो ।
चेतु फते परिवार भये बहुअंत न एकते काज सरेगो ॥
प्राण निकारिके काल बली यमराजके सन्मुख जाय धरेगो ।
पाइहैं कर्मको दंड जबै तब वाही समय पुनि जानपरेगो ॥४

दम्भ दुरास अनीति मृषा करिकै कबलों परद्रव्यहरेगो ।
लोककी लाज न भय परलोकको ह्वै वश लोभसें पाप भरेगो
काम न आइहै एको फते तन धाम यही सब छोड़ मरेगो ।
पाइहै कर्मको दंड जबै तब वाही समय पुनि जान परेगो ॥५

समस्या ७८ वीं– पावस न होय प्रलयकालको नमूनाहै
प्रीतमप्यारे परदेशको पधारे अब ताहीते सुरेश क्लेशदेत मोहिंदून।
रैन अँधियारी जल होतहै अपार तासों आमो नहिं यार आ

भयो गेह सूनाहै ॥ वानके समान आसमान ते गिरत बूंद लागत शरीर चैन परत कहूनाहै । जारत तड़ित तन होतहै बिकल मन पावस न होय प्रलयकालको नमूनाहै ॥ १ ॥

गरजत मेघ मानों छूटतहैं तोप नभ देतहै उड़ाये बचे विरही कहूँनाहै । सुनत अवाज मन टूक २ होत नाहीं ऐसो धीर वीर कोऊ देखो आजहूना है ॥ दादुरको शोर आदि वधिर श्रवण करै तड़ितको लखि विरहाग्नि ज्वाल दूनाहै । लक्ष्मण वियोगतेहै दुखको न वार पार पावस न होय प्रलय कालको नमूनाहै॥ २॥

कोप कर घन गरजत बरषत जल घटाटोप अंधकार घलै कबहूनाहै । जुगनू चमकि बरैं तनमें लगावैं आग तडित कृपाण प्राण लेत अजहूनाहै ॥ सैन बकपांतिकी संजीहै डरपावैं मोहिं मोर शोरवानते लखत क़भहूनाहैं । प्रीतम वियोगते पुरन्दरने कोप कियो पावस न होय प्रलयकालको नमूनाहै ॥ ३ ॥

अथ नर्मदाष्टकप्रारम्भः ॥

समस्या ७६ वीं—दासके पातक टारनमें अब काहे विलम्ब करो महरानी ॥

प्रगटी गिरि गांहुरमेकलते सुर ईश मुनीशन शीश चढ़ानी ।
विष्णुपदोंके समान गिनी सब पातक पोतक डाकिनी मानी ॥
त्यों जगन्नाथ बखान करै सुभई जगमें सुरलोक कहानी ।
दासके पातक टारनमें अब काहे विलम्ब करो महरानी ॥ १ ॥
पातक धाम न जानत हौं गुण अवगुणेंमे बुधिमों लपटानी ।
भाषत है जगन्नाथ कहों क्रिमि जानतहो उरकी सुखदानी ॥

या जगमें नहिं सार कछू यह पेखि महामति मो अकुलानी।
दासके पातक टारनमें अब काहे विलम्व करो महरानी ॥२॥
मात पिता सुत भ्रात अनेक कुटुम्ब गृहादिक है दुखदानी।
कामरु क्रोधरु लोभरु मोहमें तत्त्व नहीं यह वेद बखानी॥
भाषत है जगन्नाथ कृपालनी देव अदेवनकी वरदानी।
दासके पातक टारनमें अबकाहे विलम्ब करो महरानी॥ ३॥
तो पद कंजनके मकरन्दमें मो मति भौंर समान भुलानी।
भाषत है जगन्नाथ कवी तुव कीरति कल्प लता सम जानी॥
हों कर जोर करों विनती सुनिये जगमात दया गुण खानी।
दासके पातक टारनको अब काहे विलम्ब करो महरानी॥४॥
होत प्रभात अन्हायके अंगनि ध्यान धरें तटपे मुनि ज्ञानी।
शीतल निर्मल बारि बहै मन बांछित राजत हैं फलदानी॥
भाषत जगनाथ गुणाकर दारिद टारत है करके इमि ठानी।
रावरे दासके तारनको अब काहे विलम्ब करौ महरानी ॥५॥
वेद पढ़ैं तटपै द्विजराजरु यज्ञ करैं बहु मंत्र बखानी।
भाषत है जगनाथ कितेकहि दान करैं फल दीरघमानी॥
केते जपैं शिवनाम सहस्र तिने शिवही फल देव प्रमानी।
रावरे दासके तारनमें अब काहे विलम्ब करो महरानी ॥ ६ ॥
तनमें लपटाय भुजंग भली विध अंगविभूति रमाय महानी।
लोचन तीन बनाय बघम्बरके अपनी रुचि त्यों हरपानी॥
शंभु बनावत लाखनको बरमांग खवायके बैल चढ़ानी।
रावरे दासके टारनको अब काहे विलम्ब करो महरानी॥७॥

तो गुण गावत शेष सुरेष महेशहि आदिदे सारंगपानी ।
भाषत है जगन्नाथ दयालिन मोसन क्योंकर जाय बखानी ॥
पूत कपूत तो होवतु हैं पुनि मात न होय कुमाति सयानी ।
रावरे दासके तारनको अब काहे विलम्ब करो महरानी ॥ ८ ॥

समस्या ७७वीं—यमुनाके कूलनकी लाल प्यारी झूलनकी उड़त दुकूलनकी छबि दरशात है ॥

ब्रज भूमि आई सुखदाई तरु वेलिनकी नवल सहेलिनकी प्यारी बरसात है । सावन सुहावनकी शोभा सरसावनकी घन घिर आवनकी पौन परसात है ॥ वृंदावन कुंजनमें मति आली पुंजनमें गुंजन छबीले देखि डर उरझात है । यमुनाके कूलनकी लाल प्यारी झूलनकी० ॥ १ ॥

फूलनकी क्यारिनमें द्रुमनकी डारिनमें वारो ब्रज नारिनमें जोगनै जगात है । ललित लतानके पतानके वितान बीच रतन हिंडोले अनमोल झलकात है ॥ मोरनके शोरनकी शोभा घनघोरनकी रसिक छबीले लाल कापै कहि जात है ॥ यमुनाके० ॥ २ ॥

प्यारी संग लालनकी अंगन बिशालनकी मुकुता तन मालनकी ज्योतिले जगातहै ॥ बड़े २ झोकनकी गहि २ रोकनकी हंसन विलोकनकी रुचि उपजातहै । कुंडलके डोलनकी गोलसे कपोलनकी रसभरे बोलन छबीले जी समातहै ॥ यमुनाके कूलनकी लाल० ॥ ३ ॥

रसिक छबीले शिर मुकुट लटक नैन भौंहन मटक कर कुटक समातहै।प्यारी अंग चूनर चटक मुपंखकजपै लटक २

लट आली लपटातहै ॥ किंकिन पुर कटि तटपै निपट द्युति मंनकी विलोके भटकन मिटजातहै । यमुनाके कूलनकी लाल प्यारी झूलन ० ॥ ४ ॥

फूलनके मालनकी हीरनके जालनकी अलक विशालनकी उरझ सुहातहै । बेंदीभाल केशरकी नासिकाके वेसरकी रसिक छबीले लाल आभा अधिकातहै । बेंनी पीठ डोलनकी कामके कलोलनिकी झोकनिं हिंडोलनकी गोरी झिझकातहै ॥ यमुनाके कूलनकी० ॥ ५ ॥

बेना बन्दनीकी बृषभानु नन्दिनीकी मनमत्थ मथनीकी नथिनीकी छबिजातहै। नैननके कोरनकी लाली लाल डोरनकी दोउ चितचोरनकी हिय हरजातहै॥ दम्पतिके दन्तनकी द्युतिसों छबीले लाल हीरनकनी की घनी महिमा लज्जातहै॥ यमुना० ६॥

करनके बालनकी पदतर बालिनकी लालनकी लालनसों लाल सरमात है।अंकभर भेटनकी भुजन लपेटनकी उमंग छबीलनकी हृगन समातहै ॥ दोहुनकी झांकी बांकी करके अदाकी भरे कौनकी कहाकी चाह बांकी रहजातहै॥ यमुनाके कूलन०॥ ७॥

अंगन्न अभूषनकी झलक मयूषनकी पूषनकी शोभा कर दूषनजनातहै । मधुर मल्हारनकी सुरसों उचारनकी भनक छबीले लाल सुनि बलजातहै ॥ दोउनके मोदनकी पावस विनोदनकी कीने अनुमोदनकी कबिता सुहातहै । यमुनाके कूलनकी लाल प्यारी झूलनकी उड़त दुकूलनकी छबि दरशातहै ॥ ८ ॥

समस्या७८वीं—मन्द करे चन्दहि अमन्द मुख प्यारीकी ॥
हीरनके भूषण अदूषनते जागे ज्योति मोती मौलि मालाकार करके उजारीकी। सारीकी किनारी जरतारी दार दावें चोय दामनी दमंक लंक ललित कुमारी की ॥ बामन सुकवि नकबेसर विराजे मंजु अजबअदाते धरे नैननकटारीकी। ताहिते तरेरि हेरि फेरि चहुँओरनते मन्द करे चंदहि अमन्द मुख प्यारीकी ॥ १ ॥

जागत जवाहिरकी ज्योति जगमग होत दशहूं दिशाते चोय उमडे अपारीकी ॥ हीरालाल नीलम अकूत मंजुमोतिनके भूषण विराजें अंग २ सुकुमारीकी। बामन सुकवि द्युति दावत है दामिनीको उत्तर परीहै परी छवि सो सवारीकी ॥ लाज लजि जाहिं जब देखहि प्रत्यक्ष उहि मन्द करै चन्दहि अमन्द मुख प्यारीकी ॥ २ ॥

कोमल कपोल गोल अजब गुलाबी रंग मंद मुसक्यानहै कृपाण सुकुमारीकी। बेसरि विचित्र मन्मथको विराजे चक्र भौंहन कमानहरै शान सुर तारीकी ॥ बामन सुकवि विन्दु रोरी की ललाट मध्य मंत्रसों धरचोहै चतुरानन विचारी की ॥ नैनन कटारीको चलाये बरजोरी जाय मन्द करै चन्दहि अमन्द मुखप्यारीकी ॥ ३ ॥

पन्नगी परात शशि पटक पहारनमें देखिकै लोनाई औ निकाई लटकारी की। भौंहनकी वंकता विलोकि पुरहूत धरचो धनुषं उतारि जियहारि गर्बभारीकी ॥ बामन सुकवि मृग मीनन परात देखि कंज सकुचात मञ्जु लोचन कुमारीकी ॥ झांकत जबैही पो-

खराजकी लरीसी तवै मन्द करै चन्दहि अमन्द मुख प्यारीकी४

हीरनके हार कर कंगन सु बाजूबन्द मोतिनकेमाल पहिरावत सवारीकी ॥ त्योंही शीशफूल नकबेसर सजाये फेरि वार २ चूनर कुसुम्बरंग सारीकी ॥ वामन हमारे वश रहत सदाही ऐसे जावक लगावन चहत पग टारीकी। पायन परत मेरे भापो ऐसो ऐरी बीर मन्दकरै चन्दहि अमन्द मुख प्यारीकी ॥५॥

रोज २ लाओ ऐसी कहत हजार वार समुझो न एको वात मनहिं विचारीकी। लागत न घात मेरी बातें ओहि ठौर जहां सखिन समूहको विनोद सुखकारी की ॥ वामन सुकविताप रातहै उजेरी यह बाजे पगपायल विचित्र झनकारीकी । बैज नीन सारी ते छिपाये रहे ताहूपै मन्द करै चन्दहि अमन्द मुख प्यारीकी ॥ ६ ॥

मंगल ते ललित लुनाई अंग अंगनकी बुद्धते विचित्र बुद्धि कीरति कुमारीकी। गुरुते गरूर भरपूर शान शोभादार शुक्रहूंसों सरस सलोनी छवि धारीकी । वामन सुकवि त्यों शनी हूते सहस्र गुणी कज्जल कटाक्ष धरे बाढ़ अति कारीकी। रवि प्रभामें वैस सोहत हमेश और मन्दकरै चन्दहि अमन्द मुख प्यारीकी७

गोरे गोरे अंगनकी ललित लोनाई फैलि कुन्द औ कपूर धूर करत लाचारीकी। त्योहीं पोखराजनके पटल प्रभाते भरे हीरन के भूषण सुजागे ज्योति धारीकी॥ वामन कविनन्दनकी उपमा कहां लों बढै देखते दरैरै दामिनन दईमारीकी। बड़े २ नैननते तानत कटाक्ष तवै मन्द करै चन्दहि अमन्द मुख प्यारीकी८

समस्या ७९ वीं–पांच ग्राह ग्रहत मतंग मन मेरेको ॥

करिकै करार केते पाँय परि बार २ पायो अवतार नर जाने हरि हेरेको। त्योंहीं अनुसार सदा अपने परस्वारथके करत उपाय रघुनाथ नाम टेरेको ॥ पै यहांतो आपति लखाति एक भारी महा छांडि क्योंहूं भजो विषय वासना घनेरेको।नऊ ज्ञान सरितामें न्हात समय कर्म इन्द्री पांच ग्राह ग्रहत मतंग० ॥ १ ॥

जपते सदाही राम३सीताराम राधे कृष्ण३नाथ नाम तेरेको। करके कछू न और कोऊ काम काम यहीं रातदिवस आठों याम सांझ औ सबेरेको। काहू भांति खींच खांच अवशि किनारे लात्यों बिच भवसागरते जीवत सबेरेको। जौन पांच प्रबल महाये कर्मेन्द्रि नाथ पांच ग्राह ग्रहत मतंगमन मेरेको ॥ २ ॥

सुनि २ कठोर बैन मौन साधि बैठति है उत्तर कबों न देत कौन हेत तेरेको। त्योंहीं बहु भांति नित मारपीट तेरीं सहै कारन कहारीं जैसे बर्तन कसेरेको ॥ बोली मृगनयनी उन मोते बहु बार कह्यो छांड़ि चले जाते हम कब या बखेरेको। जौन तेरे ये नैन गाल भाल कुच नासिकामें पांच ग्राह ग्रहत मतंग मन मेरेको ॥ ३ ॥

छांडिकै सनेह देह गेह परिवारनको जाते बन माहिं आत्मज्ञान हेरेको। कबहूं नदी न ह्वैके जाय जाय भूपद्वार करते खुशामद न नीच नीच चेरेको॥ अपमान सहते न जगमांहि लोगनको रहते निश्चिन्त तज सबही बखेरेको। देख लेते जौन पञ्च बान जूके पांच बान पांच ग्राह ग्रहत मतंग मन मेरेको ॥ ४ ॥

हौ दयालु दीनानाथ भाषत पुराण वेद टारहु अवलम्ब यासु शील दीन फेरेको। विरद विचारो दौरि द्वारकाते आये छिनमें नशाये सब द्रौपदी बखेरेको॥ गजको जब ग्राह केवल एकही गह्यो है तब तुरत बचायो रख लाज नाम टेरेको। इते तो हहा ये काम क्रोध लोभ मोह मद पांच ग्राह ग्रहत मतंग मन मेरो को॥ ९॥

समस्या८०वीं–पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना अँखियां दुखियां नहीं मानती हैं।

सब शंक तजे गुरु लोगनके कुलकानि की आनि न आनती हैं॥ करि कोटि उपाय बुझावै कोऊ अपनी यह टेकहि ठानती हैं। परमेश जू और न जाने कछू यक प्रेमको पंथ पिछानती हैं। पियप्यारे तिहारे निहारे बिना अँखियां दुखियां नहिं मानती हैं॥ १॥

एकही गांवमें बास सदा घर पासई हौ नहिं जानती हैं।
पुनि पांचयें सातयें आवत जात को आसन चित्तमें आनती हैं॥
हम कौन उपाय करैं इनको हरिचन्द्र महा हठ ठानती हैं।
पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना अँखियां दुखियां नहीं मानतीहैं।

यह संगमें लागिये डोलें सदा विन देखे न धीरज आनती हैं।
छिनहूं जो वियोग परै हरिचन्द तौ चाल प्रलयकी सुठानती हैं॥
बरनीमें थिरें न झपैं झपैं पलमें न समाइबो जानती हैं।

पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना अँखियां दुखियां नहीं मानती हैं
व्यापक ब्रह्म सबै थल पूरण हैं हमहूं पहिचानती हैं ।
पै विना नंदलाल विहाल सदा हरिचन्द न ज्ञानहि ठानती हैं ।
तुम ऊधो यहै कहियो उनसों हम और कछू नहीं जानती हैं
पिय प्यारे तिहारे निहारे विना अँखियां दुखियां नहिं मानती हैं

विशेष रस समस्याओंके कबित्त वा सवैया ।

अंगमों सार सुगंध लगावंत बांस वही चहुँदेशको जहको
करि आली श्रृंगार अटाको चली मुख देखत लालनको लहको ॥
कंगन एक गिरो करसों वह सीढ़िन सीढ़िन फिरे बहको ।
कविगंग कहैं यक शब्द सुनो ठननन् ठननन् ठननन् ठहको८१
राति समय रसकेलि क्रियो जब भोर भयो उठि मज्जन धा
नीरके क्षीरमें देह डुबी यमुनाजलसों जैसे चन्द्रकी छांई ॥
लैबुडकी जलसों निकसीं उलझी अलकैं मुख ऊपर आई ।
द्वै कर केश-सम्हार लियो निकसो रवि फोरि पहारके ताई ८
नई अबला रसभेद न जानत सेज गई जिय माहँ डरी ।
रसवात कही तब चौंक चली त्योंहिं धायके कंतने बांहधरी ।
उन दोउनके झकझोरनमें कटि नाभिते अम्बर टूटि परी ।
कर दीपक कामिन झांपिलियो त्यहि कारण सुंदरि हाथ जरी८३
उर शोभित है बनमाल पीताम्बर बांसुरी बैन सुनावत है ।
इक छैल सखी मुसक्यात इतै नित जान अकेलहि आवतहै ॥
मन मेरो कियो वश प्रेम मों आपने शोच-यही जिय छावतहै ।

दिन रात नहीं कल देखे विना त्यहि कारण भौन न भावतहै॥ ८४
एक समय वृषभानुसुता सो प्रात गई सरितानके खोरन।
अञ्जन धोय अंगोछिके देह लगि वाहर वैठिके वार निचोरन॥
ब्रह्म भने त्यहिकी उपमा जलके कणिका वहैं केशके छोरन।
मानहु चन्दको चूसत नाग अमीरस च्वै चल्यो पूंछकी ओरन८५
श्रीवृषभानु सुता नंदलाल विराजतहैं छवि पुञ्ज छये।
कबि कृष्ण कहैं मन शील बहिक्रम चातुरता यक रंग रये॥
सुख देखि सिहात सबै सजनी विधिसों विनवैं अभिलाप नये।
यह रूप विलोकिवेको तनमों प्रति रोमन लोचन क्यों न भये ८६
काजलसी निशि सज्जलसे घन तज्जलमें चली संग न साथी।
कुंज अंधियारी सिधारी हुसेन विहारीपै जातथी शुद्धिमें नाथी॥
किञ्चित दब्बत सर्प लग्यो पग सर्प घसीटत एक पगाथी।
जोर जंजीर जरो जकरो मनो छूटिं चलो मनमत्त को हाथी ८७
जानतहै गति चोरकी चोर औ साहकी साह छलीकी छली।
कच लम्पटकी कचलम्पट गति मतिराम न जाने कहां धो चली॥
ठगकी ठग कामख कामखकी अरु जानत छैल छलीकी छली।
कहुँ फेरिदयो नथको मुकुता तिहिकारण फिरत गुलाबकली ८८
शंकर तेल मलैरजको मृग नीरमें न्हाय सुवेप वनावै।
भूषण धारण पुष्पनके फिर ओढ़ि दिगंवर देह दुरावै॥
नाम असिद्ध असंभवकी धन देखि अभौतिक रूप दिखावै।
पुत्र अभावहि गोद लिये विन वारन मांग सँवारत आवै॥ ८९॥

कृष्ण रमायुत काहि लजावत को वर्षाऋतुको दुःख टारे ।
कोमलता विध काहे दियो अरु कौन रहे जगजालते न्यारे ॥
धूनभमें केहिकोत्सव जारत कौन दुखी रामाधीन विचारे ।
मैनके मंदिर माखनको मुनि बैठ हुतासन आसन मारे ॥ ९०॥

कुच मूलमें तूलकी लाय किनारी हमें नित प्यारी दिखाइयो ना ।
दिखाइयो तो न छिपाइयो फेरि लटैं मुखपै लटकाइयो ना ॥
लटकइयो तो मटकायके भौंह कटाक्षके नैन चलाइयो ना ।
मुसक्याय मया सरसाय दया दरशाय हमैं तरसाइयो ना॥९१॥

घुंघट ओट कहा करि सुन्दरि घूंघटसे कछु तोर न लैहैं
जोतोहि रूप दियो करतारने दूर खड़ी हम दूर चितैहैं ॥
जानके गर्व कहा कर सुन्दरि काल्ह परों दिन येऊ न रैहैं ।
या जिय जान भजो भगवान किं तोरे छिये वैकुंठ न जैहैं९२॥

साहभये पकरैं करैं चोरके चाटक ओट उठावत छप्परु ।
दामरि कामरि भूलि गई अब आयेहो ओढ़ि कपूरिया कप्परु ॥
कान्ह भये कबते कुतवाल सखा लियेको दानत पप्परु ।
तासों बडाई करौ कोइ जानेन काल्हके जोगी कलींदके खप्परु९३

केतिक धोस भये समझावत नेक न मानतहै मन भोंदू ।
भूलिरह्यो विषया सुखमें कछु और न जानतहै शठ तोंदू ॥
आंखिन कानन नाक विना शिर हाथ न पाँव नहीं मुख पोंदू ।
सुन्दरताहि गहे कोऊ क्योंकर नीकासिजाय वडो मन लोंदू॥९४

दौरतहै दशहूँ दिशिको शठ वायु लगी तबते भयो बेंडा ।

लाज न काज कछू नहिं राखत शील स्वभावके फोरतभेंडा ॥
सुन्दर सीख कहा कहिदीजे भिदे नाहिं बाण छिदे नाहिं गेंडा ।
लालच लागि रह्यो मन बीखरे बारहबाट अठारह पेंडा ॥ ९५ ॥

डोले नवेली अटापर बाल लसे कुसमानी छटान अनूखे ॥
लाल बिहाल भये मगमें लखि श्वास लई अधरारस भूखे ।
सैन करी यमुनातटलों चलिये उत न्हाइये प्रेम पयूखे ॥
न्हांयचुकी यों जनावतीहैं तिहि कारण केश निचोरत सूखे९६

जान सुजान सों प्रीति करी सहिके जगकी बहु भांति हँसाई ।
त्यों हरिचन्द जू जो २ कह्यो सो करो चुपह्वैकर कोटि उपाई॥
सोई नहीं निवही उनपै उन तोरत बार कछू न लगाई ।
सांची भई कहनावति वा अरी ऊंची दुकानकी फीकी मिठाई९७

संग रह्यो सुख संग लह्यो कबहूं न भयो इकहूं पल न्यारो।
छोड़के सोई चलो अब चाहत कैसे बने बल-कोउ बिचारो ॥
प्रीतमको अरु प्राणन को हठ देख वहे अँसुआन पनारो ।
कैधों चलेगो अगार सखी यह देहते प्राणके गेह ते प्यारो॥९८॥

यह प्रेम कथा कहिबे की नहीं कहिवेही करो कोउ मानतहैं।
पुनि ऊपरी धीर धरायो चहै तनु रोग नहीं पहिचानतहैं ॥
कबि ठाकुर जाहि लगी कसकैं नहीं सो कसकैं उर आनतहैं ।
बिन आपने पैर बेवाई गये कोउ पीर पराई न जानतहैं ॥९९॥

सजि सोहे दुकूलन बिज्जु छटासी अटामें चढ़ी घटा जोवतीहैं।
रंगराती सुनै ध्वनि मोरनकी मदमाती संयोग संजोवती हैं ॥

कहि ठाकुर वे पिय दूर बसे हम आंशुनसे तन धोवती हैं।
धनि वे धन पावसकी रतियां पतिकी छतियां लगि सोवतीहैं १००

परकारज देहको धारे फिरो पर जन्म यथारथ ह्वै दरसौ।
विधनीर सुधाके समान करो सब भांतिन सज्जनता सरसौ॥
घन आनँदजीवन दायक हो कछु मेरी ये पीर हिये परसौ।
कबंहूं वा बिसासी सुजानके आंगन मो अँशुआनहुंलों बरसौ १०१

विशेष शृंगार रस और विरहावस्थाके अपूर्व सवैया।

आयबो तीर बताइबो कोमल है मुसक्यायबो भावतोजीको।
छायबो मोद वही ललिते मिलजाइबो और लगाइबो हीको ॥
रूप दिखायबों भायबो भावन नेह मिटायबो लागत फीको।
जो हितको सरसायबो तो तरसायबो दूरहि ते नहिं नीको ॥ १ ॥
कंजकलीसे उरोजनको पट खोल दुरे दरशावति काहे।
नैननते तकि ताष उन्हें पर मैन भरे वरसावति काहे ॥
जो सुख लीवे नं दीवे तुम्हें यह पातक तो सरसावति काहे।
नेह नये गुण गाहकको हक नाहकते तरसावति काहे ॥ २ ॥
मानकी औध है आधी घरी अरु जो रसखान डरे डरकेडर।
तोरिये नेह न छोड़िये पां परों ऐसे कटाक्ष महा हियराहर ॥
लाल गुपालको हाल विलोकरी नेक छुवेकिन दैकरसों कर।
"ना"कहिये पर वारत प्राण कहा लखि वारि है "हाँ"कहिवे पर ३
मीस उरोज दोऊ उरमें भरिकै भुज कंठमें कंठ लगाये।
चूमि कपोल कपोल मिलायके ऊरु दुहून सों ऊरु दवाये ॥
काम कलोल कला कर कोटि कहै ललिते अतिही हरपाये।
श्यामके संग उमंग भरी रतिरंगके कोटि तरंग दिखाये॥ ४ ॥
बात चली चलिवेकी जहां तहां बात सुहानी न गात सुहानो।
भूषण साज सके कहिको महाराज गयो छुटि लाजको वानो ॥

यों कर मींडत है वनिता सुनि प्रीतमको परभात पयानो।
आपने जीवनको लखि अंत सु आयुकी रेख मिटावती मानो ५॥
बैठी सलोनी सहेलिनके ढिग चन्द्र सों चारुप्रभा अधिकारी।
ताही समय परदेशकी औचक जायबेकी सुनी होत तयारी॥
सासुहे ह्वै पिय लालजी सों कछु बोल सके नहिं लाजकी मारी।
कंजमुखी पर्यंक पै जाय रही मुरझाय मनोजकी मारी॥ ६ ॥
प्रीतम गौन सुने गजगौनीको भूषन भौन सबै बिसरो है।
अंग परी तलबेली महा कविराज तहां भरि आयो गरो है॥
नैननते जलधार धर्‌यो मिलि अंजनसों उर आनि परो है।
चीरबेको तियको हियरा बिरहा बढई मनो सूत धरो है॥७॥
विनोदसों अंग उमंगन चारु अनंग तरंग सनाय सनाय।
सुगंध सने पट भूषण लाय सुकेशर सींचो बनाय बनाय॥
हँसी सिगरी निशि लालजी धारि गये बहु भांति मनाय मनाय।
भरी रिस सोचे खरी अब काहे अरी हारि हारे मनाय मनाय ८
पांवरी आनि भिखारी मनो पजनेश सदाचित देत है फेरी।
जीकी कठेठी अठेठी गँवारिन नेक नहीं कबहूं हँस हेरी॥
आंधरे रूपके जीमते बावरी जाने नहीं पर पीरता ऐरी।
नंदकुमारहि देखि दुखी छतियां कसकी न कसायन केरी॥९॥
घहराती घटा गणपाल लखो छहराती छटा छति ह्वै अतियां।
लहराती लता लपटी लटकें थहराती पपीहनकी बतियां॥
नहराती नदीन नदीन मनो झहराती झरी दिनहूं रतियां।

कहराती दरीनमें केकी लखो हहराती वियोगनकी छतियां।१०।

बिहरैं पिय प्यारी सनेहं सने छहरैं चुनरीके झवा भहरैं।
शिहरैं नवयौवन रंग अनंग सुभंग अपांगिनकी गहरैं॥
बहरैं रसखान नदी रसकी घहरैं वनिता कुलहू भहरैं।
कहरैं विरही जन आतपसों लहरैं लली लाल लिये पहरैं॥११॥

अबहूं करि प्रीति सुनो हियधारि दयानिधि नेक जुड़ावो करो।
मुरली ध्वनि प्राणपियारे पिया कबहूं मग कानन नावो करो॥
गणपाल न चाहिये ऐसी तुम्हें नित चेतके हेत लगावो करो।
अपनाय मिलाय बनाय हिये इतनो न भला तरसावो करो १२

कोहैं कहैं मोरवागण कूकि त्यों पोहैं अनन्द लता लहरानरी॥
जोहैं बधू विधुकी पतिपारियां छोहैं ही बूंदरियां झहरानरी।
गोहैं बलाकनकी गनपाल जू खोहैं अनेक विधी थहरानरी॥
भोहैं मनोजकी माती मनै लखि सोहैं घटामें छटा छहरानरी १३

दिन औधिके सोऊ व्यतीत भये पुनि पाई न प्रीतमकी पतियां॥
घहरानी अनोखी घटा नभ त्यों चपला चक चौंधत हैं अतियां।
गनपाल मनोज मनोज करैं डरपावति आपनी कै घतियां।
सजनी अब कोऊ उपाय रचो दुखदेतीहैं सावनकी रतियां १४

मकराकृत कुंडल गुंजकी माल वे लाल लसैं पग पांवरिया।
बछरानि चरावनके मिस भावतो दैगयो भावती भांवरिया॥
रसखान विलोकतही सिगरी भई बावरिया ब्रज डाँवरियां।
सजनी इहि गोकुलमें विषसों बगरायो है नंदके सांवरिया॥१५॥

अंगन अंग मिलाय दोऊ रसखान रहे लपटे तरु छांहीं ।
संग निसंग अनंग को रंग सुरंग सनी पियदै गलबांही ॥
बैंन ज्यों मैन सुऐन सनेह को लूटि रहे रति अंतर जाहीं ।
नीवी गहे कुच कंचन कुम्भ कहे वनिता पिय नाहीं जु नाहीं १६ ॥

ऋतु पावस श्याम घटा उनई लखिकै मन धीर धरातो नहीं ।
ध्वनि दादुर मोर पपीहनकी सुनिकै क्षण चित्त थिरातो नहीं ॥
जबते कवि बिछुरे बोधाहितू तबते उर दाह बुझातो नहीं ।
हम कौनते पीर कहैं अपनी दिलदारतो कोऊ दिखातो नहीं १७

घूम घटा घनकी गरजैं चमकैं चपला छित छूवैं फेरी ।
शोर करैं चहुँ ओरते मोर जुरी करैं कोलिया कूक घनेरी ॥
गोकुल सीरो समीर लगे केहि भांति सों धीर रहेगी घनेरी ।
मोहिं बिना यह सावनकी निशिं भावन कैसे बिताय है हेरी १८

मुख चुम्बनमें मुख लै जो भजे पियके मुखमें मुख नायो चहै ॥
गल बाहीं गुपालके मेलतहीं मुख नाहीं कहै मनते न कहै ।
नहिं देत निवाज छुवै छतियां छतियां में लगाये ते लागी रहै ।
कर खैंचत सेजकी पाटी गहै रतिमें रतिकी परिपाटी गहै ॥ १९ ॥

विपरीति रची रति दम्पति यों जहां छाय रहे बंगला खसके ।
कविचन्द दुहूनके मोद बढ्यो कहि सो कवि बृन्द कथा नसके
मुख चूंवती भावते भांवते की अरु देतीं उरोजनके मसके ।
रसके उपजावत पुंज खरे पिय लेत परे रसके चसके ॥ २० ॥

हमको तुम एक अनेक तुम्हें उनहींके विवेक विकाने रहो ।

इत चाह तिहारी उते व्यभिचारी सनेह में तो उतसाने रहो ॥
हमतो अब औरके और भई उनहीं को प्रिया निज जाने रहो ।
अरसाने रहो संरसाने रहो हरसाने रहो तरसाने रहो ॥ २१ ॥

बतियान सुनायके सौतनकी छतियानमें साल सुलाय लैरी ।
सपनेहू न कीजिये मान आपे अपने योबना की बलाय लैरी ।
परमेश जू रूप तरंगन सों अंग अंगनि रूप रलाय लैरी॥
दिन चारक तू पिय प्यारेके प्यारसों चामके दाम चलाय लैरी २२

सुन नीको न नेह लगावनोहै फिर जोपै लगे तो निवाहनोहै ।
अति ओछीहै प्रीतिकी रीति सखी नाहिं रोसको जोस सुहा वनोहै॥
चलि चन्द्रमुखी ब्रजचंद मिलो तुमको हमें का समझावनोहै ।
दिन चारको रूप यह पाहुनोहै फिर तोपै रहेगो उराहनो है२३॥

खोजत जाहि सुरेश महेश दिनेशहू नित्य दुहूंदिश धावै ।
जाहि "फते" दृग आंजि तपो लखि पूरण ब्रह्म सबै सुख पावै॥
गौतमनारि परे पद रेणुके देह शिला तजि स्वर्ग पठावै ।
सोपद की रज खोजबेको शिर धूर गयंद हमेश चढ़ावै ॥ २४ ॥

इति ॥

दोहा—परमेश्वरकी कृपाते, पूर्ण भयो यह ग्रंथ ।
रसिक जननके पठन हित, अहै प्रेमको पंथ ॥
प्रेम व्यथा शृंगार रस, और बीर रस जान ।
बहु प्रकार वर्णन कियो, यामें झूठ न आन ॥
रसिकनके आनन्द हित, यही ग्रंथ है एकं ।

उड़त समीर सुगंध मय, फूले फूल अनेक ॥
अरुण कमलसे नेत्र अरु, जिनके बाहु विशाल।
तिनहीकी पद रज चहत, नित बनवारी लाल ॥
सोरठा—प्रेमहि प्रेम अधार, प्रेम एक सांचो सदा।
सोई प्रेम अपार, चहुँदिश यही दिखात है ॥
भूल चूक जो होय, बुध जन लेहु सुधार सब।
मैं बालकहूं सोय, बुद्धि-हीन जानत नहीं ॥
सब कवियनको दास, या बनवारी लाल है।
और नहीं कोइ आस, एक आश तुम्हरी अहै ॥
मम प्रिय मित्र उदार, सूरज नारायण अहैं।
सर्व गुणन भंडार, उनहीमें हम देखियत ॥
दोहा— तिनकी आज्ञा पायमैं, ग्रन्थ कियो तय्यार।
उनहींकी सब कृपासे, मैं पायो सुखसार ॥

अथ समस्या अपूर्ति।

पूर्ति करनेके निमित्त लिखी गई।

१ नीच परी यह कीच कचाई २ नेह नवलासों अभिलाष सन्यो रहो ३ किन लोगन देश बिगाड़ दियो ४ शंकर केहि कारण योगी भये ५ धर्म प्रचारक रीति बताओ ६ टूटि गयो कँगना करसों ७ केहि कारण नारि सतीपन त्याग्यो ८ कर पिक पल्लभ सो पल्लभ औ कंज मुख ९ मूशल मूशला धार बहायो १० केहि कारण योगी जटा पटका ११ बांधे जटा केहि

कारण योगी १२ पट पीत धरचो धरणी पै कहे १३ कहु ज्ञानकी मूलको कुंड कहां १४ घट कोरो वनो पर पानी भरै १५ केहि कारण नारि गुदावें गुदना १६ मानो शंकर पर चाबुक चलायो है १७ दशों अवतार किधौं राधा नैन तेरे हैं १८ एक नार छियानवे नैननसो १९ घन बीच काहे कुच लीक परी २० भूधर काहे भुजंग गह्यो २१ केहि कारण हंश चकोर लड़े २२ केहि कारण फूली फली न चमेली २३ वारिधिसे विष काहे कढ़्यो २४ सतयुग पाछे क्यों भयो त्रेता २५ ढ़िग देखपरै गहि जात नहीं है २६ मानो सविता उछंगमें २७ श्रोणित भार लचकी २८ बारहों महीना औंर मनावत वसंत है २९ कानमें तूल और आंखमें धूली ३० तनिक लिख पठैवी वा सूरत ससुरकी ३१ मग ज़ात रही गिर क़ाहे परी ३२ हम वारहिं बार निहारत हैं ३३ कैसी करूं मैं प्यारे बिना ३४ केहि भांतिसे धीरज होयनहीं ३५ अब नेक नहीं जिय लागत मेरो ३६ प्यारे मम प्राणअधार अहो ३७ प्यारी तुम्हारे समान न कोऊ ३८ हमको यह दुःख मंहान भयो ३९ प्रीति लगी कहूं छूटत है ४० प्रीति ये कैसी भई अनरीत है ४१ हजार काम छोड़के बजार देख आइये ४२ अपनी जरूर जाजरूर जांइयत है ४३ केहि कारण शंभू त्रिनैन भये ४४ केहि कारण वर्षमें तीन ऋतु ४५ केहि कारण देहमें रोमावली ४३ केहि कारण व्रजमें कृष्ण भये ४७ भलो मकरन्दको बुन्द चुओ ४८ युवती क्यों मूँछ विहीन भई ४९ आज प्राणप्यारी विन मंदिर लगत सून्यो है ५०

रावण रामहिं राशि दुहूँ इक रार मची कहु कारणका ५१कैसे बंधे जल जालके बांधे ५२ पानी बिन जानी जिन्दगानी कौन कामकी ५३ अबला केहि हेत पतिव्रत खोयो—केहि कारण विप्र ये पूज्य भये ५४ जिवैये लीलिगये पतरी५५ सूमके ससुर सूमई होत हैं ५६ मृग सींगन आंसू जात बहे ५७ लागि पडे बबूलमें दाखे ५८ केहि कारण रैनमें चन्द्र भयो ५९ सीकेकी टूटन और लपकन बिलैयाकी ६० देनेको न छोड़े फिर पीछे दगा देते हैं ६१ किमि कारण गौ मम ओर फिरी ६२ केहि कारण भारत आरत है ६३ केहि कारण वस्तु विनाश भई ६४ कैसन हो उन्नति भारतकी ६५ हमहूं कछु आज छपावत हैं ६६ नागिनकट पै बल खाय रही६७ गौओंको क्लेश लखो नहिं जाय दया करिकै अब बेग उबारो ६८ प्रीति निबाहन उपाय बताओ ६९ उजारचलीं ससुरारि क टोला ७० घूस पुलीस न लेत जहांहै ७१ तुम एक हमें हम हजार तुम्हें ७२ केहि कारण जननी पुत्र भखै ७३ लग्न भये दिन कैसे कटेंगे ७४ लखिकै डरदी डरहू डर पावे ७५ साजिये सकार तो उदारको कवित्त होत अरु साजिये ककार तो वखीलको बखानिये ७६ अजै मुख आरतके दीजे वैराट सुत ऐसो मुखचन्द तेरो जोवत कन्हाई री७७ ताप परातमें ऐसे परेहैं ७८ हैना ओस मोती पै वनस्पति रोतीहै ७९ बिन बारन मांग सँवारत आवै ८०कब इन्दुपै छांह भुजंग कियो ८१ आज गुलाबके फूलको सूंघ्यो ८२आवत नारि उछारत निम्बू८३चार भुजानसों सोहत विष्णू

८४ पाँयन बाज रहे बहु घुंघरू८५आंधरे ने अधरात समय शशि मंडल में रवि मंडल देख्यो८३मच्छ चढ़ो गिरिराजके ऊपे८७प्यारी बिना सबरंग हैं फीके. ८८ नई प्रीति हमे तो सुहावन लागत ८९अनोखी भई यह प्रीति तुम्हारी९०झूठहिं आज बघारत शेखी

(इसे अवश्य पढ़िये और अपने निज मित्रोंको सुनाइये)

उपरोक्त समस्याओंकी पूर्तियां निम्न लिखित पते पर आना चाहिये इसकारण सुकवि महाशयोंसे निवेदन है कि, यथा शक्ति समस्याओंकी पूर्तियां जहांतक होसके उनको भेजकर मुझे कृतार्थ कीजिये और उनसे जो पुस्तक बनेगी तो उन पूर्तिकर्त्ता महाशयोंके पास उत्तम पूर्ति आनेपर एक प्रति उनकी सेवामें पारितोष्कार्थ अर्पण की जायगी आशा है कि, सुकवि महाशय हमारी इस प्रार्थना पर अवश्य ध्यान देकर यशके भागी बनेंगे ॥

इति काव्यरत्नाकर समाप्त।

आपका प्रेमाकांक्षी-

(निवेदक)—बनवारीलाल गुप्त,

सदरबाजार, जबलपूर.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना.

(मुंबई.)

ज्योतिषग्रंथाः ।

२७९	शीघ्रबोधभाषाटीका	०—६	०—१
२८०	संकेतनिधिसटीक पं० रामदत्तजीकृत यह ग्रंथ अत्युत्तम देखने योग्य है	१—०	०—२
२८१	षट्पंचाशिका भाषाटीका	०—४	०—॥
२८२	भुवनदीपक सटीक	०—४	०—॥
२८३	जैमिनिसूत्रसटीक चार अध्यायका	०—७	०—१
२८४	रमलनवरत्न	०—८	०—१
२८५	रमलनवरत्नभाषाटीका	०—१२	०—१
२८६	सर्वार्थचिंतामणि	०—१२	०—२
२८७	लघुजातकसटीक	०—६	०—१
२८८	सामुद्रिकभाषाटीका	०—४	०—॥
२८९	सामुद्रिक शास्त्रबडा सान्वय भाषाटीका	१—४	०—२
२९०	यवनजातक	०—२	०—॥
२९१	पंचांगतिथिपत्र संवत् १९५२ का	०—१॥	०—॥
२९२	पंचांग १०वर्षका (ज्योतिर्विदोंकालोभदायक)	१—८	०—२
२९३	हायनरत्न	१—८	०—४
२९४	अर्घप्रकाश ज्योतिष भाषाटीका इसमें तेजी मंदी वस्तु देखनेका विचार है	०—४	०—॥
२९५	ज्योतिषकी लावणी	०—१	०—॥
२९६	शकुनवसंतराज भाषाटीकासहित	३—०	०—८
२९७	रत्नद्योतभाषाटीका	०—५	०—॥
२९८	बृहत् मुहूर्त्तसिंधु	२—०	०—४
२९९	मकरंदसारिणी उदाहरण सहित	०—१०	०—१
३००	भावकुतूहलभाषाटीका (फलादेशउत्तमोत्तमहै)	१—०	०—२

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास.

"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना मुंबई.